हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

# गिरिराज

साप्ताहिक

डाक पंजीकरण संख्याः एच.पी./42/एस.एम.एल. 2009 साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

वर्ष 31 अंक 25 शिमला, 25–31 मार्च, 2009 हर बुधवार को प्रकाशित मूल्य : एक प्रति 3.00 रुपये वार्षिक 140 रुपये आजीवन 1500 रुपये website : himachalpr.gov.in/giriraj.asp

**घर बैठे गिरिराज पाइये**

गिरिराज का आजीवन ग्राहक बनने के लिए सदस्यता शुल्क **1500 रुपये** बैंक ड्राफ्ट या मनिआर्डर के माध्यम से **निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क, शिमला-2** व वार्षिक सदस्य बनने के लिए सदस्यता शुल्क **140 रुपये, सम्पादक, गिरिराज साप्ताहिक, शिमला-171005** के नाम से भेजे।

पते में पिन कोड लिखना न भूलें

**इस अंक में**

| | |
|---|---|
| साहित्य... | 5 |
| सर्व शिक्षा अभियान | 6-7 |
| कृषि/बागबानी... | 8 |
| महिला/बाल जगत/स्वास्थ्य ... | 9 |
| पहाड़ी पृष्ठ | 10 |

## शिक्षण सस्थानों में रैगिंग पर रोक

# मंत्रिमण्डल द्वारा हि. प्र. रैगिंग निरोधक अध्यादेश-2009 को स्वीकृति

- **24 घंटे में संस्थान प्रमुख को कार्रवाई करनी होगी**
- **संस्थान द्वारा विलम्ब करने पर एक साल की कैद का प्रावधान**
- **तीन साल का कारावास/पचास हजार तक जुर्माना या दोनों सजाओं का प्रावधान**
- **'अमन काचरू मेमोरियल ट्रस्ट' स्थापित होगा**

**हिमाचल** प्रदेश मंत्रिमंडल ने गत दिनों शिमला में आयोजित बैठक में हिमाचल प्रदेश शिक्षा संस्थानों में रैगिंग निरोधक अध्यादेश-2009 को स्वीकृति प्रदान की। अध्यादेश अंतर्गत शिक्षा संस्थानों के परिक्षेत्र व इससे बाहर रैगिंग पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने का प्रावधान किया गया है। मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने बैठक की अध्यक्षता की।

अध्यादेश के अनुसार रैगिंग एक संगीन अपराध, ग़ैर जमानती तथा न्यायालय की अनुमति पर 'कंपाउंडेबल ऑफेंस' होगा। अध्यादेश के अंतर्गत कोई भी विद्यार्थी अपराधी पाए जाने पर शिक्षा संस्थान से निकाला जा सकता है तथा निकाले जाने की तिथि से 3 वर्षों तक किसी भी शिक्षा संस्थान में प्रवेश के लिए पात्र नहीं होगा। इस तरह के अपराधियों को 3 वर्षों का कारावास अथवा 50 हजार रुपये जुर्माना या दोनों ही सजाएं हो सकती हैं।

ऐसे मामले में कोई भी विद्यार्थी, माता-पिता व अभिभावक व शिक्षा संस्थान का प्राध्यापक तथा कार्यालय प्रभारी संबंधित शिक्षा संस्थान के प्रमुख को लिखित तौर पर रैगिंग की शिकायत करते हैं, तो संस्थान के प्रमुख को शिकायत मिलने के 24 घण्टे के भीतर मामले की जांच करना आवश्यक होगा। उसे अपने उच्च अधिकारियों को इस विषय में जानकारी देने के अतिरिक्त, प्राथमिक तौर पर शिकायत सही पाए जाने पर दोषी विद्यार्थी को निलंबित किया जाएगा। यदि प्राप्त शिकायत का पता नहीं चल पाए तो इस बारे में शिकायतकर्ता को लिखित तौर पर वास्तविक स्थिति के बारे में जानकारी दी जाएगी। शिक्षा संस्थान में रैगिंग को रोकने के लिए अध्यादेश के प्रावधानों को लागू करने में चूक होने की स्थिति में संस्थानगत अनुशासन प्राधिकरण द्वारा किसी भी प्रकार चूक अथवा स्थानीय पुलिस में प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज़ करवाने में जानबूझ कर किया गया विलम्ब आपराधिक कार्य माना जाएगा, जिसके लिए एक वर्ष का कारावास अथवा 10,000 रुपये तक जुर्माना अथवा दोनों सजाएं हो सकती हैं। जबकि शिक्षा संस्थान के प्रमुख व प्रभारी को भी सज़ा व जुर्माना हो सकता है। सज़ा दो वर्षों तक तथा जुर्माना 25000 रुपये तक बढ़ाया जा सकता है और दोनों ही सज़ाएं हो सकती हैं। मंत्रिमंडल ने 50 लाख रुपये के कोष का 'अमन काचरू मैमोरियल ट्रस्ट' स्थापित करने को स्वीकृति प्रदान की, जिसके अंतर्गत उत्कृष्ट विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां प्रदान की जाएंगी तथा विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न गतिविधियां, विशेष तौर पर रैगिंग के खिलाफ गतिविधियों को प्रमुखता प्रदान की जाएगी।

## सभी गैर सरकारी शिक्षण संस्थानों के निरीक्षण के आदेश

**मंत्रिमंडल ने समस्त उपायुक्तों, उप निदेशक प्रारंभिक शिक्षा तथा जिला कल्याण अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे सभी ग़ैर सरकारी संगठनों का निरीक्षण करें। विशेष तौर पर ऐसे संगठनों, जहां छात्रावास चलाए जा रहे हैं, ताकि गुणात्मक जीवन स्तर को सुनिश्चित बनाया जा सके तथा जिस उद्देश्य के लिए एन.जी.ओ. गठित किया गया है, उसके लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कार्य किया जा सके।**

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल शिमला में राजस्व विभाग की बैठक की अध्यक्षता करते हुए

# सूखे से उत्पन्न स्थिति पर रिपोर्ट तैयार की जाएगी

**प्रदेश** सरकार सर्दी के मौसम में राज्य में हुई नाममात्र वर्षा तथा बर्फबारी के कारण उत्पन्न भयंकर सूखे की स्थिति के बारे में एक रिपोर्ट तैयार करेगी, जिसे केन्द्र सरकार को भेजा जाएगा तथा गर्मियों के मौसम में राज्य को जलापूर्ति एवं पशु चारा इत्यादि के लिए धनराशि उपलब्ध करवाने का आग्रह करेगी। यह बात मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों शिमला में राजस्व विभाग की इस बारे बुलाई गई बैठक की अध्यक्षता करते हुए दी।

मुख्य मंत्री ने कहा कि सर्दियों के मौसम के दौरान प्रदेश भर में कम वर्षा के कारण प्रतिकूल जलवायुगत परिस्थितियों के चलते गर्मियों में प्रदेश में पेयजल संकट गहराने तथा पशु चारे की कमी हो सकती है, जिससे निपटने के लिए कारगर कदम उठाए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि राजस्व विभाग के 'फील्ड स्टॉफ' को निर्देश दिए हैं कि राज्य में उत्पन्न सूखे की स्थिति के कारण फसलों को हुए नुकसान की विस्तृत रिपोर्ट तैयार की जाए, ताकि इसे राज्य स्तर पर संकलित कर राज्य सूखा राहत प्राप्त करने के लिए केन्द्र को प्रेषित किया जा सके। उन्होंने कहा कि गत वर्ष प्रदेश में भारी वर्षा से 2000 करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान हुआ था तथा प्रदेश सरकार द्वारा केन्द्र से पर्याप्त राहत राशि उपलब्ध करवाने का आग्रह किया गया है। अभी तक कोई राहत राशि प्रदेश सरकार को उपलब्ध नहीं हुई है तथा राहत एवं पुनर्वास कार्यों के लिए अपने स्तर पर प्रबंध किया है। उन्होंने राज्य में किसी भी स्थिति से निपटने के लिए आपदा प्रबन्धन प्रणाली को सुदृढ़ करने पर भी बल दिया।

उन्होंने राजस्व अधिकारियों को निर्देश दिए कि कानूनी राय प्राप्त करने के उपरांत राजस्व नियमों में आवश्यक संशोधन लाकर नायब तहसीलदारों को भू-बंटवारा की शक्तियां प्रदान करने की संभावनाओं का पता लगाया जाए। उन्होंने उपायुक्तों को जिला स्तर पर लंबित पड़े राजस्व मामलों को समयबद्ध तरीके से निपटाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में भूमि-रिकार्ड का कम्प्यूटरीकरण का कार्य लगभग पूरा होने वाला है तथा प्रदेश के 20871 राजस्व गांवों में से 18344 गांवों का डाटा एंट्री कार्य पूरा कर लिया गया है। प्रदेश की 83 तहसीलों में 16592 गावों के उपलब्ध भूमि रिकार्ड का कम्प्यूटरीकरण किया जा चुका है। उन्होंने प्रदेश के सिरमौर तथा चंबा जिलों में आरंभ की गई 'कैडास्ट्रल मैप्स पायलट परियोजना' के डिज़िटलाइजेशन कार्य को गति प्रदान करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि प्रदेश में जाली स्टांप पेपरों पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से (शेष पृष्ठ 11 पर)

## लोक सभा चुनाव-2009

# 46 लाख मतदाता करेंगे मताधिकार का प्रयोग

**गिरिराज समाचार सेवा**

**हिमाचल** प्रदेश में 13 मई, 2009 को पांचवें चरण में चार सीटों के लिए मतदान होगा। कांगड़ा, शिमला, मण्डी तथा हमीरपुर संसदीय क्षेत्रों में कुल 46 लाख, 4 हजार, 832 मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। मतदान को सुचारू ढंग से सुनिश्चित करनेके लिए 7251 मतदान केन्द्र स्थापित किए जाएंगे। पांचवें चरण में देशभर में 86 सीटों के लिए मतदान होगा, जिसमें राज्य की चार संसदीय सीटें भी शामिल हैं। 4604832 मतदाताओं में से 23,47,522 पुरुष तथा 22,57,310 महिला मतदाता हैं।

राज्य में पहली बार दृष्टिहीन मतदाताओं को ब्रेल लिपि में इलैक्ट्रॉनिक्स वोटिंग मशीन उपलब्ध करवाई जाएगी। इस बार के लोक सभा चुनाव प्रदेश में संसदीय तथा विधान सभा क्षेत्रों के परिसीमन आदेश, 2008 के तहत करवाये जा रहे हैं। हालांकि परिसीमन प्रक्रिया के उपरांत लोक सभा तथा विधान सभा की सीटें उतनी ही रही हैं, लेकिन कुछ विधान सभा क्षेत्रों को जनसंख्या तथा क्षेत्र के आधार पर अन्य क्षेत्रों में शामिल किया गया है।

कांगड़ा संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत पड़ने वाले सुलह विधान सभा क्षेत्र में 87758 मतदाता हैं जो प्रदेश में किसी भी विधान सभा क्षेत्र में सबसे अधिक मतदाता हैं। उसके बाद मण्डी संसदीय क्षेत्र में जोगेन्द्रनगर विधान सभा क्षेत्र में 84306 मतदाता हैं।

कांगड़ा संसदीय क्षेत्र में जवाली विधान सभा क्षेत्र में प्रदेश में तीसरे नम्बर पर 79966 मतदाता हैं। प्रदेश के नौ विधान सभा क्षेत्रों में महिला मतदाता पुरुषों से अधिक हैं। ये हैं कांगड़ा संसदीय क्षेत्र में जयसिंहपुर विधान सभा क्षेत्रों, सुलह विधान सभा क्षेत्र मण्डी संसदीय क्षेत्र में जोगेन्द्रनगर विधान सभा क्षेत्र, सरकाघाट विधान सभा क्षेत्र, हमीरपुर संसदीय क्षेत्र में देहरा, धर्मपुर, भोरंज तथा सुजानपुर विधान सभा क्षेत्र। इनमें सुलह में 45023 सबसे अधिक महिला मतदाता हैं। जोगेन्द्रनगर में उसके बाद 42771 महिला मतदाता हैं और तीसरे नम्बर पर सरकाघाट में 37716 महिला मतदाता हैं। प्रदेश में 1889 मतदान केन्द्र स्थापित कि जाएंगे। कांगड़ा संसदीय क्षेत्र में 1777, मण्डी संसदीय क्षेत्र में 1920, हमीरपुर संसदीय क्षेत्र में 1665 और शिमला संसदीय क्षेत्र में 1889 मतदान केन्द्र स्थापित किए जाएंगे। सबसे अधिक 157 मतदान केन्द्र शिमला संसदीय क्षेत्र के ठियोग विधान सभा क्षेत्र में स्थापित किए जाएंगे। उसके बाद मण्डी संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत भरमौर (अ.ज.) विधान सभा क्षेत्र में 137 तथा तीसरे स्थान पर शिमला संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत चौपाल एवं मण्डी संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत रामपुर विधान सभा क्षेत्रों में 136-136 मतदान केन्द्र स्थापित होंगे।

सबसे कम 85 मतदान केन्द्र कांगड़ा संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत धर्मशाला विधान सभा क्षेत्र में स्थापित किए गए हैं। इसके उपरांत कांगड़ा संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत पालमपुर विधान सभा क्षेत्र में तथा हमीरपुर संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत घुमारवीं और श्री नैनादेवी विधान सभा क्षेत्रों में 86-86 मतदान केन्द्र बनाए गए हैं। हमीरपुर संसदीय क्षेत्र के ही बिलासपुर विधान सभा क्षेत्र में 87 मतदान केन्द्र स्थापित किए गए हैं। (चारों संसदीय क्षेत्र में विधान सभा क्षेत्रवार मतदाताओं का विवरण पृष्ठ दो पर )

# अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता का परिणाम घोषित

**हिमाचल** प्रदेश के भाषा एवं संस्कृति विभाग द्वारा साहित्यिक पत्रिका 'विपाशा' के अंतर्गत आयोजित अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता-2008 के परिणाम घोषित कर दिए गए हैं। प्रतियोगिता के लिए गत वर्ष 2 अक्तूबर 2008 तक कहानियां आमंत्रित की गई थीं और उसके बाद निर्णय प्रक्रिया चल रही थी। भाषा एवं संस्कृति विभाग के सचिव श्री बी.के. अग्रवाल के अनुसार इस कहानी प्रतियोगिता में श्री संजय सिंह की कहानी 'आपका बेटा अमेरिका में है ना' पहले स्थान पर रही है और इन्हें 5000 रुपये का प्रथम पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। श्री संजय सिंह महात्मा गांधी हिन्दी विश्वविद्यालय, (शेष पृष्ठ 11 पर)

# जल संरक्षण की आवश्यकता पर बल

प्रधान सचिव सिंचाई एंव जन स्वास्थ्य श्री नरेन्द्र चौहान ने गत दिनों शिमला में केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड एंव केन्द्रीय भूमि जल प्राधिकरण द्वारा हिमाचल प्रदेश में भू-जल का सदुपयोग एंव प्रबन्धन पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए जल के संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में करीब 17 हजार हैण्डपम्प स्थापित हैं जो प्रदेश में विशेषकर निचले क्षेत्रों में पेयजलापूर्ति कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में अधिकांश वर्षा जल बहकर नदी-नालों में व्यर्थ चला जाता है जिसके सरंक्षण के लिये कृषि, वन, बागबानी एंव आईपीएच जैसे सम्बद्ध विभागों को एकजुटता से प्रयास करने चाहिए।

इस अवसर पर प्रमुख अभियन्ता सिंचाई एंव जनस्वास्थ्य श्री आर.एन. शर्मा ने कहा कि प्रगतिशील युग में शहरीकरण व औद्योगिकरण से जल की खपत दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। उन्होंने कहा कि जल मौजूदा परिप्रेक्ष में महत्वपूर्ण है और इसके बेहतर प्रबन्धन और संरक्षण में अन्य सम्बद्ध विभागों के साथ आम लोगों को भी अपना योगदान देना होगा।

केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड के क्षेत्रीय निदेशक श्री जे.एस. शर्मा ने कहा कि इस कार्यशाला का उद्देश्य वैज्ञानिकों, इंजीनियरों तथा स्वंयसेवियों को एक मंच पर लाकर हिमाचल प्रदेश में भूजल संरक्षण, संवर्धन एंव प्रबन्धन पर विचार-विमर्श करना है, जिससे भू-जल पर दिनों-दिन बढ़ रहे दवाब को कम किया जा सके। उन्होंने कहा कि वर्षा-जल सबसे विशुद्ध पेयजल है और इसके संरक्षण की आवश्यकता है ताकि भूमि जल स्तर में वृद्धि हो। उन्होंने बताया कि केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड के 10 वर्षों के आंकड़े एकत्र कर इस पर अनुसंधान कर रहा है। उन्होंने कहा वर्ष 2004 द्वारा प्राप्त आंकड़ो पर हिमाचल प्रदेश में भूजल की स्थिति बेहतर है क्योंकि केवल 31 प्रतिशत का दोहन हुआ है और 60 प्रतिशत सुरक्षात्मक तरीके से और दोहन किया जा सकता है।

# पर्वतीय जनजीवन में मेलों की अहम भूमिका

पर्वतीय जन जीवन में मेले हमारी सांस्कृतिक विरासत को सहज कर रखने के लिए एक महत्वपूर्ण सामाजिक गतिविधि है जिससे समाज के सभी वर्गों में सौहार्द का वातावरण पनपता है जो समाज के सर्वांगीण विकास के लिए सहायक सिद्ध होता है। यह बात सचिव, प्रदेश भाषा, कला एवं संस्कृति बी.के. अग्रवाल ने गत दिनों बिलासपुर के लुहणु मैदान में राज्य स्तरीय नलवाड़ी मेले के उद्घाटन अवसर पर कही। उन्होंने कहा कि हमारी सांस्कृतिक विरासत प्राचीन एवं समृद्ध है। उन्होंने कहा कि यह मेलों और त्यौहारों में प्रतिबिम्बित होती है।

# चार संसदीय क्षेत्रों के लिए मतदाताओं एवं मतदान केन्द्रों का विवरण

| लोकसभा क्षेत्र | विधानसभा क्षेत्र सं. (लोकसभा क्षेत्र में) | पोलिंग स्टेशन की कुल संख्या | आम मतदाता पुरुष | आम मतदाता महिला | आम मतदाता कुल | सर्विस मतदाता पुरुष | सर्विस मतदाता महिला | सर्विस मतदाता कुल | कुल मतदाता |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1-कांगड़ा | 1. चुराह (एससी) | 108 | 30512 | 29784 | 60296 | 151 | 60 | 211 | 60507 |
| | 3. चम्बा | 116 | 34195 | 34404 | 68599 | 137 | 43 | 180 | 68779 |
| | 4. डलहौजी | 102 | 30572 | 29284 | 59856 | 134 | 31 | 165 | 60021 |
| | 5. भटियात | 109 | 31555 | 31130 | 62685 | 1043 | 389 | 1432 | 64117 |
| | 6. नूरपुर | 109 | 36563 | 35048 | 71611 | 1141 | 510 | 1651 | 73262 |
| | 7. इंदौरा (एससी) | 104 | 37039 | 35048 | 72087 | 862 | 331 | 1193 | 73280 |
| | 8. फतेहपुर | 104 | 34699 | 34063 | 68762 | 1053 | 382 | 1435 | 70197 |
| | 9. ज्वाली | 113 | 38879 | 39243 | 78122 | 1304 | 540 | 1844 | 79966 |
| | 12. ज्वालामुखी | 92 | 30793 | 30996 | 61789 | 951 | 381 | 1332 | 63121 |
| | 13. जयसिंहपुर (एससी) | 108 | 33727 | 37801 | 71528 | 1414 | 612 | 2026 | 73554 |
| | 14. सुलह | 129 | 41011 | 44246 | 85257 | 1724 | 777 | 2501 | 87758 |
| | 15. नगरोटा | 103 | 36466 | 36118 | 72584 | 914 | 368 | 1282 | 73866 |
| | 16. कांगड़ा | 94 | 33722 | 33346 | 67068 | 529 | 216 | 745 | 67813 |
| | 17. शाहपुर | 110 | 35558 | 35938 | 71496 | 1094 | 510 | 1604 | 73100 |
| | 18. धर्मशाला | 85 | 33972 | 32859 | 66831 | 874 | 401 | 1275 | 68106 |
| | 19. पालमपुर | 86 | 32430 | 31959 | 64389 | 932 | 368 | 1300 | 65689 |
| | 20. बैजनाथ (एससी) | 105 | 37279 | 37891 | 75170 | 1074 | 440 | 1514 | 76684 |
| | **कुल** | **1777** | **588972** | **589158** | **1178130** | **15331** | **6359** | **21690** | **1199820** |
| 2-मंडी | 2. भरमौर (एसटी) | 137 | 35411 | 33286 | 68697 | 127 | 45 | 172 | 68869 |
| | 21. लाहौल-स्पीति (एसटी) | 89 | 11427 | 11195 | 22622 | 280 | 79 | 359 | 22981 |
| | 22. मनाली | 96 | 32097 | 30260 | 62357 | 86 | 25 | 111 | 62468 |
| | 23. कुल्लू | 131 | 39212 | 36548 | 75760 | 168 | 88 | 256 | 76016 |
| | 24. बंजार | 122 | 31295 | 29603 | 60898 | 127 | 58 | 185 | 61083 |
| | 25. आनी (एससी) | 125 | 36666 | 34491 | 71157 | 131 | 62 | 193 | 71350 |
| | 26. करसोग (एससी) | 98 | 30306 | 29058 | 59364 | 132 | 51 | 183 | 59547 |
| | 27. सुन्दरनगर | 105 | 35752 | 34426 | 70178 | 449 | 155 | 604 | 70782 |
| | 28. नाचन (एससी) | 101 | 34411 | 34386 | 68797 | 705 | 222 | 927 | 69724 |
| | 29. सिराज | 116 | 33637 | 32074 | 65711 | 141 | 44 | 185 | 65896 |
| | 30. द्रंग | 118 | 36744 | 35928 | 72672 | 631 | 210 | 841 | 73513 |
| | 31. जोगिन्द्रनगर | 126 | 40170 | 42189 | 82359 | 1365 | 582 | 1947 | 84306 |
| | 33. मंडी | 101 | 32083 | 32679 | 64762 | 898 | 288 | 1186 | 65948 |
| | 34. बल्ह (एससी) | 95 | 31956 | 32078 | 64034 | 805 | 268 | 1073 | 65107 |
| | 35. सरकाघाट | 106 | 36181 | 37302 | 73483 | 1156 | 414 | 1570 | 75053 |
| | 66. रामपुर (एससी) | 136 | 35379 | 32855 | 68234 | 98 | 52 | 150 | 68384 |
| | 68. किन्नौर (एसटी) | 118 | 26087 | 24219 | 50306 | 394 | 60 | 454 | 50760 |
| | **कुल** | **1920** | **558814** | **542577** | **1101391** | **7693** | **2703** | **10396** | **1111787** |
| 3-हमीरपुर | 10. देहरा | 98 | 32909 | 33967 | 66876 | 1150 | 488 | 1638 | 68514 |
| | 11. जसवां-परागपुर | 105 | 33275 | 33058 | 66333 | 885 | 359 | 1244 | 67577 |
| | 32. धर्मपुर | 97 | 31728 | 34731 | 66459 | 1272 | 508 | 1780 | 68239 |
| | 36. भोरंज (एससी) | 99 | 32651 | 35774 | 68425 | 1562 | 441 | 2003 | 70428 |
| | 37. सुजानपुर | 102 | 29297 | 32273 | 61570 | 2251 | 849 | 3100 | 64670 |
| | 38. हमीरपुर | 90 | 32058 | 32594 | 64652 | 1403 | 531 | 1934 | 66586 |
| | 39. बड़सर | 107 | 34622 | 36819 | 71441 | 1973 | 822 | 2795 | 74236 |
| | 40. नादौन | 116 | 38581 | 39492 | 78073 | 1197 | 238 | 1435 | 79508 |
| | 41. चिंतपूर्णी (एससी) | 99 | 36352 | 35252 | 71604 | 719 | 301 | 1020 | 72624 |
| | 42. गगरेट | 90 | 34187 | 34572 | 68759 | 1092 | 415 | 1507 | 70266 |
| | 43. हरोली | 104 | 36164 | 34152 | 70316 | 629 | 216 | 845 | 71161 |
| | 44. ऊना | 97 | 35996 | 34982 | 70978 | 309 | 107 | 416 | 71394 |
| | 45. कुटलैहड़ | 110 | 34974 | 34976 | 69950 | 850 | 284 | 1134 | 71084 |
| | 46. झण्डूता (एससी) | 92 | 32640 | 31802 | 64442 | 1013 | 398 | 1411 | 65853 |
| | 47. घुमारवीं | 86 | 36676 | 37086 | 73762 | 1197 | 497 | 1694 | 75456 |
| | 48. बिलासपुर | 87 | 35514 | 34506 | 70020 | 629 | 270 | 899 | 70919 |
| | 49. श्री नयना देवीजी | 86 | 30621 | 28225 | 58846 | 253 | 90 | 343 | 59189 |
| | **कुल** | **1665** | **578245** | **584261** | **1162506** | **18384** | **6814** | **25198** | **1187704** |
| 4-शिमला | 50. अर्की | 129 | 37600 | 36906 | 74506 | 506 | 178 | 684 | 75190 |
| | 51. नालागढ़ | 96 | 36136 | 33823 | 69959 | 620 | 164 | 784 | 70743 |
| | 52. दून | 84 | 27437 | 24665 | 52102 | 392 | 122 | 514 | 52616 |
| | 53. सोलन (एससी) | 118 | 39288 | 35325 | 74613 | 217 | 69 | 286 | 74899 |
| | 54. कसौली (एससी) | 88 | 29040 | 26181 | 55221 | 294 | 97 | 391 | 55612 |
| | 55. पच्छाद (एससी) | 107 | 31565 | 29537 | 61102 | 365 | 69 | 434 | 61536 |
| | 56. नाहन | 102 | 34335 | 32231 | 66566 | 522 | 139 | 661 | 67227 |
| | 57. श्री रेणुका जी (एससी) | 119 | 29055 | 27253 | 56308 | 284 | 54 | 338 | 56646 |
| | 58. पांवटा साहिब | 94 | 34610 | 29994 | 64604 | 340 | 59 | 399 | 65003 |
| | 59. शिलाई | 96 | 31441 | 25876 | 57317 | 193 | 35 | 228 | 57545 |
| | 60. चौपाल | 136 | 34399 | 32134 | 66533 | 155 | 51 | 206 | 66739 |
| | 61. ठियोग | 157 | 36457 | 35264 | 71721 | 245 | 93 | 338 | 72059 |
| | 62. कसुम्पटी | 106 | 34892 | 30348 | 65240 | 133 | 35 | 168 | 65408 |
| | 63. शिमला | 91 | 37022 | 27880 | 64902 | 93 | 54 | 147 | 65049 |
| | 64. शिमला ग्रामीण | 119 | 36111 | 33731 | 69842 | 360 | 120 | 480 | 70322 |
| | 65. जुब्बल-कोटखाई | 127 | 31829 | 31295 | 63124 | 134 | 72 | 206 | 63330 |
| | 67. रोहड़ू (एससी) | 120 | 33865 | 31520 | 65385 | 148 | 64 | 212 | 65597 |
| | **कुल** | **1889** | **575082** | **523963** | **1099045** | **5001** | **1475** | **6476** | **1105521** |
| | **राज्य कुल** | **7251** | **2301113** | **2239959** | **4541072** | **46409** | **17351** | **63760** | **4604832** |

# प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में उपलब्धियां उल्लेखनीय

**शिक्षा** के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल करने के बाद अब राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के कार्यान्वयन में प्रदेश इस महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में और ऊंचाइयां हासिल करेगा। 11वीं पंचवर्षीय योजना के तहत तैयार की गई इस योजना के अंतर्गत हिमाचल को विशेष पैकेज मिलना लगभग तय है। इस पैकेज के तहत राज्य की भौगोलिक परिस्थितियों के मद्देनजर हिमाचल को केंद्र से 90 प्रतिशत राशि अनुदान के रूप में मिलेगी जबकि प्रदेश को केवल 10 प्रतिशत राशि ही खर्च करनी होगी।

केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के तहत विशेष श्रेणी का दर्जा प्राप्त राज्यों को 90 प्रतिशत अनुदान देने का योजना में प्रावधान किया है और हिमाचल विशेष श्रेणी के राज्यों में आता है। शेष राज्यों को राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के तहत 75 प्रतिशत अनुदान का ही प्रावधान है जबकि 25 प्रतिशत राशि इन राज्यों को स्वयं खर्च करनी होगी। हिमाचल प्रदेश को राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के लिए विशेष श्रेणी के राज्य के तहत बजट का प्रावधान किया जाए, इसके लिए शिक्षा विभाग द्वारा केंद्र सरकार को प्रस्ताव भेजा गया है। 11वीं पंचवर्षीय योजना के तहत देशभर में पहले चरण में राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के तहत लगभग 2800 सकूल खोले जाने हैं। स्कूलों के निर्माण के लिए 9321 करोड़ रुपये का बजट रखा गया है जिसमें केंद्र का हिस्सा लगभग 7457 करोड़ रुपये है। योजना के अंतर्गत पहले चरण में प्रदेश को पांच मॉडल स्कूल मिलेंगे, जबकि अन्य चरणों में सभी 79 शिक्षा खंडों में एक–एक स्कूल खोला जाएगा। पहले चरण में प्रदेश के पांगी, तीसा, मैहला, सलूणी तथा शिलाई में मॉडल स्कूल खोलने के लिए जगहों का चयन कर लिया गया है। इन स्कूलों में छठी से बारहवीं तक कक्षाएं शुरू की जा रही हैं। इन मॉडल स्कूलों में प्रवेश के लिए छात्रों को केंद्रीय व नवोदय विद्यालयों की तरह ही प्रवेश परीक्षा देनी होगी। उच्च शिक्षा निदेशक डा. ओपी शर्मा का कहना है कि राज्य की भौगोलिक परिस्थितियों को देखते हुए 90 : 10 के आधार पर अनुदान मिलना चाहिए। केंद्र सरकार को प्रस्ताव भेज दिया गया है और मंजूरी मिलने की पूरी संभावना है।

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल औद्योगिक निगमों की बैठक की अध्यक्षता करते हुए

## जवाहर नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा

**जवाहर** नवोदय विद्यालय ठियोग द्वारा 2009–10 शिक्षा सत्र की छठी कक्षा प्रवेश हेतु चयन परीक्षा का आयोजन 11 अप्रैल 2009 (शनिवार) को जिला शिमला में बनाए गए 16 परीक्षा केंद्रों में किया जा रहा है। परीक्षा का समय 10 बजे से 12 बजे तक होगा तथा अभ्यर्थी को परीक्षा केन्द्र पर सुबह 9.00 बजे पहुंचना है। रोल नम्बर संबंधित खण्ड शिक्षा कार्यालय को भेजे जा चुके हैं। रोल नं. भेजे गए खण्ड शिक्षा कार्यालय से प्राप्त किए जा सकते हैं तथापि जवाहर नवोदय विद्यालय के दूरभाष 01783–238248, 237697 तथा 98170–17765 पर भी इस संबंध में सम्पर्क किया जा सकता है।

## विद्यार्थियों के पथ प्रदर्शक बनें अध्यापक

**हिमाचल** प्रदेश विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय दूरवर्ती शिक्षा एवं मुक्त अध्ययन केन्द्र से पत्राचार माध्यम से बीएड कर रहे छात्र–छात्राओं ने विश्वविद्यालय सभागार में सांस्कृतिक कार्यक्रम 'होली उत्सव' का आयोजन किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुनील कुमार गुप्ता मुख्य अतिथि थे और कार्यक्रम की अध्यक्षता इकडोल के निदेशक प्रो. एन.के. शारदा ने की। कुलपति प्रो. गुप्ता ने सभी छात्र–छात्राओं को कहा कि एक अध्यापक ही विद्यार्थियों को संस्कार, अच्छी शिक्षा और समाज में एक अच्छा नागरिक बनाने में अहम भूमिका निभा सकता है। उन्होंने कहा कि शीघ्र ही पत्राचार माध्यम से शिक्षा ग्रहण कर रहे विद्यार्थियों की सभी समस्याएं हल कर दी जाएंगी। इकडोल के निदेशक प्रो. एन. के. शारदा ने विद्यार्थियों को पत्राचार से अच्छी सेवाएं प्रदान करने की वचनबद्धता दोहराई।

कार्यक्रम की संयोजक डा. मंजू लोहमी ने मुख्य अतिथियों का धन्यवाद किया और व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी।

## पंचायत प्रतिनिधियों को दी नरेगा की जानकारी

**राज्य** संसाधन केंद्र शिमला के तत्त्वावधान में ज्ञान–विज्ञान के सहयोग से शिमला ने वाईएमसीए में आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला में पंचायती राज प्रतिनिधियों को नरेगा की जानकारी दी गई। इस कार्यशाला में प्रदेशभर से जिला परिषद सदस्यों, पंचायत समिति सदस्यों, पंचायतों के प्रधान–उपप्रधान और वार्ड पंचों ने भाग लिया। कार्यशाला के दूसरे दिन निर्वाचित प्रतिनिधियों को नरेगा की जानकारी और पंचायती राज के समक्ष चुनौतियों पर चर्चा की गई।

इससे पहले सत्र में डीआरडीए शिमला के परियोजना अधिकारी टशी संदूप ने मुख्य वक्ता के तौर पर नरेगा के प्रावधानों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि अब नरेगा के तहत अनुसूचित जाति–जनजाति और आईआरडीपी व बीपीएल परिवार अपनी निजी भूमि का विकास या उस पर पौधरोपण का कार्य भी कर सकते हैं।

### नरेगा के कार्यों में पारदर्शिता लाने के लिए वार्ड स्तर पर विलेज मॉनिटरिंग कमेटी का गठन

उन्होंने यह भी बताया कि नरेगा के कार्यों में पारदर्शिता लाने के लिए वार्ड स्तर पर विलेज मॉनिटरिंग कमेटी का गठन किया गया। इसके बाद जिया नंद शर्मा ने राजस्थान में नरेगा को लागू करने के अपने अनुभवों को प्रतिभागियों के साथ साझा किया। बाद में उपस्थित लोगों व अधिकारियों की चर्चा में यह मुद्दा प्रमुख रूप से उठा कि सरकार की भौगोलिक स्थिति के मद्देनजर ग्रामीण दरें निर्धारित करनी चाहिए, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न– भिन्न कार्यों के लिए मजदूरी तय की जा सके।

पंचायती राज के तहत आ रही चुनौतियों पर आयोजित चर्चा में विश्वप्रेमी, चंबा के पार्षद रतन ठाकुर और नगर निगम शिमला के पार्षद मीरा शर्मा ने भाग लिया। इसमें मुख्य रूप से पंचायतों में आधारभूत ढांचे की बात उभरकर सामने आई। सभी प्रतिभागियों ने भी यही कहा कि ग्रामीण स्तर पर तकनीकी व ढांचागत संसाधनों की कमी है, जिससे पंचायतें विकास योजनाएं बनाने में सक्षम नहीं हैं।

## चंबा में स्थापित होगी ट्राउट सैंक्चरी

**प्रदेश** में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए चंबा जिला में ट्राउट सैंक्चुरी एरिया बनाया जाएगा। इससे जहां चंबा जिला में पर्यटकों की आमद बढ़ेगी, वहीं मत्स्य पालन व्यवसाय को भी बढ़ावा मिलेगा।

विजय पुरी, सहायक निदेशक, मत्स्य पालन विभाग के अनुसार इस योजना को अमलीजामा पहनाने की कवायद तेज कर दी गई है तथा योजना के तहत 30 हजार ट्राउट मछली के बीज यहां पर डाले जाएंगे जिसमें से 22 हजार ट्राउट मछली का बीज रावी में डाला जा चुका है तथा कार्यालय बनाने के लिए भी प्रस्ताव भेजा गया है।

इस ट्राउट सैंक्चुरी को होली से बगा के बीच रावी नदी पर 60 किलोमीटर के एरिया में स्थापित किया जाएगा। सैंक्चुरी एरिया बनने के बाद यहां पर मत्स्य आखेट पूरी तरह से प्रतिबंधित होगा। केवल पर्यटकों को मत्स्य आखेट के लिए बाकायदा विभाग लाइसेंस जारी करेगा। यह लाइसेंस एक से पंद्रह दिनों तक के लिए बनाया जाएगा तथा लाइसेंस धारक ही यहां आखेट कर पाएंगे।

## बड़े पैमाने पर भर्तियां करेंगे अर्द्धसैनिक बल

**आर्थिक** मंदी के दौरान छंटनी तथा भर्तियों पर रोक के बीच अच्छी खबर देश के अर्द्धसैनिक बलों से आ रही है। सरकार ने छह अर्द्धसैनिक बलों को मजबूत करने की योजना बनाई है जिस पर अमल होने पर ये बल नौकरियों का खजाना खोल सकते हैं। गृह मंत्रालय के अधिकारियों ने नई दिल्ली में कहा कि सीआरपीएफ,बीएसएफ, सीआईएसएफ, आईटीबीपी, एसएसबी तथा एनएसजी को 123 नयी बटालियन बनाने का अधिकृत किया गया है। ये बटालियनें अगले दो से तीन साल में बनेंगी।

हर बटालियन में लगभग 1100 लोग होंगे और कुल मिलाकर भर्तियों की संख्या 1.35 लाख से अधिक रहेगी। ये नौकरियां महिलाओं के लिए भी होंगी। अगले वित्त वर्ष 2009–10 में लगभग 25 नयी बटालियन बनेंगी जिनमें देश भर से 28,000 भर्तियां की जाएंगी। एक अधिकारी ने कहा– मुंबई में आतंकवादी हमलों के बाद से अर्द्ध सैनिक बलों के आधुनिकीकरण पर जोर दिया जा रहा है। यह आधुनिकीकरण मानव संसाधन तथा हथियार, दोनों रूपों में किया जाएगा। मौजूदा तथा भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए नयी बटालियन बनाने को मंजूरी दी गई है।

फिलहाल सीआईएसएफ, सीआरपीएफ, बीएसएफ, एनएसजी, आईटीबीपी, एसएसबी तथा असम राइफल्स में 7,17,909 जवान हैं। सीआरपीएफ में सर्वाधिक 201 बटालियन हैं। सूत्रों ने कहा कि सीआईएसएफ को अपनी संख्या को बढ़ाकर 1,45,000 करने की मंजूरी दी गई है जो फिलहाल 1,12,000 है। (भाषा)

## केसर उत्पादन को बढ़ावा देगा आई.एच.बी.टी.

**हिमाचल** में जल्द ही केसर की महक बिखेरी जाएगी। हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान ने इस दिशा में पहल की है। बड़े स्तर पर केसर के उत्पादन में अभी तक पिछड़े क्षेत्र में क्लक प्रोडक्शन को लेकर प्रयास किए जा रहे हैं। केसर की खेती में प्रारंभिक स्तर पर ही राट फ्यूजेरियम रोग के चलते केसर का उत्पादन सिमटता जा रहा है। काम्ब प्रोडक्शन सही ढंग से कलैक्टीन फैशन में आगे बढ़े इसके लिए हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान ने कार्य आरंभ किया है। संस्थान के निदेशक डा. पी.एस. आहूजा बताते हैं कि टिशू कल्चर से काम्ब बनाए जाएंगे। प्रदेश में किन्नौर व अन्य ऊंचाई वाले स्थानों पर केसर की खेती की जाती है, वहीं कश्मीर का जाफरान (केसर) विश्व भर में अपनी पहचान बना चुका है। प्रदेश के मंडी की बल्ह घाटी में भी केसर की संभावनाएं तलाशी जा रही हैं। प्रदेश में केसर की खेती वाले क्षेत्रों में प्रारंभिक सतर पर रोग का आक्रमण पौध पर हो रहा है, वहीं कश्मीर में भी कमोबेश यही समस्या है। हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थन के निदेशक डा. पी.एस. आहूजा ने कहा कि केसर की काम्ब प्रोडक्शन अभी सफल नहीं हो पाई है। लेकिन संस्थान ने दायित्व स्वीकारते हुए इस दिशा में कार्य आगे बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि हम तालमेल के सथ हल निकालने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि रोगमुक्त काम्ब बनाना चुनौती है। उनहोंने कहा कि कश्मीर में भी केसर की पैदावार प्रभावित हुई है। उन्होंने बताया कि टिशू कल्चर से काम्ब बनाकर उसे सही स्थान पर बड़ा किया जाएगा। (एजेंसियां)

## अप्रैल के प्रथम सप्ताह में मनाया जाएगा स्वच्छता सप्ताह

**सचिव**, ग्रामीण विकास डॉ. श्रीकांत बाल्दी ने बताया कि प्रदेश में स्वच्छता अभियान को गति प्रदान करने के उद्देश्य से 1 से 7 अप्रैल, 2009 तक स्वच्छता सप्ताह मनाया जाएगा। डॉ. बाल्दी ने यह जानकारी गत दिनों शिमला में इस संबंध में आयोजित एक बैठक को संबोधित करते हुए दी।

डॉ. बाल्दी ने कहा कि स्वच्छता सप्ताह के दौरान प्रदेश भर में सिंचाई एवं जनस्वास्थ्य, स्वास्थ्य, शिक्षा व सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभागों द्वारा जन अभियान आरंभ कर, साफ सफाई तथा स्वस्थ पर्यावरण के बारे में लोगों को जागरूक बनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि सप्ताह के प्रत्येक दिन को स्वच्छता के अलग विज्ञय पर केन्द्रित कर जिला तथा खंड स्तर पर लोगों को विशेष रूप से जागरूक किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि सप्ताह का पहला दिन पाठशाला स्वच्छता–स्वच्छता प्रहरी दिवस, दूसरा दिन मीडिया–सूचना एवं शिक्षा दिवस, तीसरा दिन देवता–स्वच्छ वातावरण दिवस, चौथा दिन जल शुद्धता–स्वच्छ पानी स्वस्थ समाज, पांचवां दिन प्रतिबद्धता–संकल्प दिवस (ग्राम सभा दिवस), छठा दिन आंगनबाड़ी एवं बाल–गोपाल दिवस तथा सातवां दिन व्यक्तिगत स्वच्छता–वैश्विक स्वच्छता दिवस के रूप में मनाया जाएगा।

बैठक में सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य, स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता तथा अन्य विभागों के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

कांगड़ा जिला में भी पहली अप्रैल से 07 अप्रैल 2009 तक स्वच्छता सप्ताह आयोजित किया जायेगा।

यह जानकारी देते हुये उपायुक्त कांगड़ा केके पंत ने कहा कि जिला में स्वच्छता अभियान को प्रभावी ढंग से कार्यान्वित करने के लिए स्वच्छता सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है।

### जन अभियान से जागरूक बनाया जाएगा प्रदेशवासियों को

उन्होंने कहा कि स्वच्छता सप्ताह के दौरान पहली अप्रैल को पाठशाला स्वच्छता–स्वच्छता प्रहरी दिवस के रूप में अभियान का शुभारम्भ किया जायेगा जिसमें शिक्षण संस्थाओं में सफाई करने के अतिरिक्त नारा एवं निबंध लेखन तथा वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा। इसके अतिरिक्त पाठशालाओं में बच्चों को स्वच्छता बनाये रखने की शपथ दिलाने के साथ–साथ स्वच्छता दूत का शुभारम्भ एवं बाल संसद का गठन किया जायेगा ताकि शिक्षण संस्थाओं में सफाई व्यवस्था सुचारू ढंग से बनाई जा सके।

उन्होंने कहा कि स्वच्छता अभियान का दूसरा दिवस मीडिया–सूचना एवं शिक्षा दिवस के रूप में मनाया जायेगा जिसमें जिला एवं उप-मंडल स्तर पर मीडिया से जुड़े लोगों के साथ बैठकें करके स्वच्छता अभियान को जन आन्दोलन बनाने तथा लोगों को स्वच्छता के बारे में जागरूक करने हेतु मीडिया से सहयोग का आग्रह किया जायेगा जबकि अभियान का तीसरा दिवस स्वच्छ वातावरण दिव्य वातावरण देवता दिवस के रूप में मनाया जायेगा जिसके अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रें के धार्मिक स्थलों पर स्वच्छता बनाये रखने के लिए माहिला/युवक मंडल तथा स्वयं सहायता समूह का सहयोग लिया जायेगा।

स्वच्छता अभियान का चौथा दिवस स्वच्छ पानी स्वस्थ समाज दिवस–जल शुद्वता के रूप में मनाया जायेगा जिसके अन्तर्गत सभी पारम्परिक एवं अन्य जलस्रोतों की सफाई का कार्य सुनिश्चित किया जायेगा जबकि अभियान का पांचवां दिवस ग्राम सभा -संकल्प दिवस के रूप में मनाया जायेगा जिसके अन्तर्गत ग्राम सभा की बैठकों में लोगों को अपने आस-पास के क्षेत्र को स्वच्छ बनाने हेतु कार्य योजना तैयार की जायेगी ताकि लोग स्वैच्छिक रूप से इस अभियान में अपना योगदान दे सकें।

अभियान का छठा दिवस आंगनबाडी एवं बाल दिवस के रूप में आयोजित किया जायेगा जिसमें माहिला मंडल पंचायती राज एवं समाज कल्याण विभाग की सहभागिता सुनिश्चित होगी तथा स्वास्थ्य विभाग द्वारा सक्रामक बीमारियों के फैलने एवं रोकथाम के उपाय बारे लोगों को जागरूक किया जायेगा। जबकि अभियान का सातवां एवं अन्तिम दिवस विश्व स्वास्थ्य दिवस के रूप में मनाया जायेगा। इस अवसर पर स्वच्छता अभियान में उत्कृष्ट कार्य करने वाले माहिला मंडलों को सम्मानित किया जायेगा। उपायुक्त ने जिला के सभी लोगों से अपील की है कि वह इस अभियान में अपना रचनात्मक सहयोग देकर इसे सफल बनाये क्योंकि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सफाई का होना बहुत अनिवार्य है क्योंकि गंदगी के कारण कई प्रकार के बीमारियों के फलने की सम्भावनायें बढ़ जाती है।

गिरिराज
हिमाचल की प्रगति और संस्कृति का दर्पण

**आप सम्मान अपने साथ नहीं ले जाते, बल्कि अपने पीछे उसे धरोहर के रूप में छोड़ जाते हैं। —ब्रांच रिकी**

## लोकसभा चुनाव

गतांक से आगे

भारत में लोकतांत्रिक प्रणाली है। यहां पर लोगों की लोकतांत्रिक व्यवस्था में गहरी रूचि एवं आस्था है। भारतवर्ष विश्व का सबसे सशक्त लोकतंत्र देश है। जहां एक आम आदमी के मत की भी वही महत्ता है, जो एक उच्च पद पर आसीन व्यक्ति की। लोकतांत्रिक प्रणाली में नागरिक अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से अपना शासन स्वयं चलाते हैं और उन द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि उनकी आस्था और विश्वास के प्रतीक होते हैं। हिमाचल प्रदेश में निष्पक्ष, स्वतंत्र एवं शांतिपूर्वक चुनावों की गौरवमयी परम्परा रही है। भविष्य में भी यहां के शांतिप्रिय लोग इस परम्परा को बनाये रखेंगे यही सभी की उम्मीद है। कानून व चुनाव आयोग के दिशा निर्देशों का पूरा पालन किया जाता रहा है। आज का मतदाता जागरूक है। देश में हुए अब तक के चुनावों में अमीर, गरीब, किसान, व्यवसायी, नौकरी पेशा, छात्र, श्रमिक तथा समाज के हर वर्ग मतदान में विशेष रूचि लेते हैं। समाज में पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं में भी विशेष उत्साह रहता है। एक समय था जब लोग किसी प्रत्याशी की लोकप्रियता उसके झण्डों, बैनरों, चुनाव सभाओं में लोगों की भीड़ से आंकते थे लेकिन आज मतदाताओं में जागरूकता व परिपक्वता आई है। चुनाव यज्ञ में सबसे बड़ी भूमिका मतदाता की ही रहती है। भारत निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों के तहत चुनाव अभियान के दौरान उम्मीदवाद, उसके समर्थक, राजनैतिक दल या उनके कार्यकर्ता या कोई भी व्यक्ति सार्वजनिक स्थलों और निजी स्थानों पर न नारे लिख सकता है और न ही पोस्टर चिपका सकता है। यह निर्वाचन आयोग द्वारा जारी अनुदेशों के अलावा राज्य के शहरी इलाकों में हिमाचल प्रदेश खुले स्थान (विरूपण निवारण) अधिनियम, 1985 के तहत पूरी तरह वर्जित है। इसके अतिरिक्त चुनाव आयोग ने आचार संहिता में स्पष्ट किया है कि किसी दल या अभ्यर्थी को ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जो विभिन्न जातियों और धार्मिक या भाषायी समुदायों के बीच विद्यमान मतभेदों को बढ़ाए या घृणा की भावना उत्पन्न करे या तनाव पैदा करे। आलोचना केवल नीतियों और कार्यक्रमों तक ही सीमित होनी चाहिए। यह भी आवश्यक है कि व्यक्तिगत जीवन के ऐसे सभी पहलुओं की आलोचना नहीं की जानी चाहिए जिनका सम्बन्ध अन्य दलों के नेताओं कार्यकर्ताओं के सार्वजनिक क्रियाकलाप से न हो। दलों या उनके कार्यकर्ताओं के बारे में कोई ऐसी आलोचना नहीं की जानी चाहिए जो ऐसे आरोपों पर जिनकी सत्यता स्थापित न हुई हो या तोड़-मरोड़ कर कही गई बातों पर आधारित हो। मत प्राप्त करने के लिए जातीय या साम्प्रदायिक भावनाओं की दुहाई नहीं दी जानी चाहिए। मस्जिदों, गिरजाघरों, मंदिरों या पूजा के अन्य स्थानों का निर्वाचन प्रचार के लिए मंच के रूप में उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। सभी दलों और अभ्यर्थियों को ऐसे सभी कार्यों से ईमानदारी के साथ बचना चाहिए, जो निर्वाचन विधि के अधीन 'भ्रष्ट आचरण' और अपराध है, जैसे कि मतदाताओं को रिश्वत देना, मतदाताओं को अभित्रस्त करना, मतदाताओं का प्रतिरूपण, मतदान केन्द्र के 100 मीटर के भीतर मत संयाचना करना, मतदान की समाप्ति के लिए नियत समय को खत्म होने वाली 48 घण्टे की अवधि के दौरान सार्वजनिक सभाएं करना और मतदाओं को सवारी से मतदान केन्द्रों तक ले जाना और वहां से वापस लाना। क्रमश:

# परीक्षा पद्धति में आवश्यक है बदलाव

जन राय
अरुण गौतम

प्रतिवर्ष मार्च महीने के आगमन का अर्थ विद्यार्थियों के लिए सिर्फ और सिर्फ परीक्षा ही है। परीक्षा शब्द चूंकि फल और निष्फल से जुड़ा है, इसका डर होना स्वाभाविक ही है। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी परीक्षाओं के मौसम में इसको लेकर तर्क-वितर्क, चर्चा, सुधारों को लेकर विचार विमर्श, गोष्ठियों का आयोजन पूरे रंगत में है। शैक्षणिक दिवस जो कि सरकार द्वारा निर्धारित किये जाते हैं, इन्हीं दिवसों में अध्यापक छात्रों को पढ़ाता है तथा इस पठन-पाठन का मूल्यांकन शैक्षणिक कैलेण्डर के अंत में परीक्षा के माधयम से किया जाता है। इस प्रकार का यह एक क्रम तथा कड़ी आपस में एक दूसरे को जोड़ती है।

बहुत पहले से लेकर एक बहस शिक्षा प्रणाली में सुधारों को लेकर चली आ रही है। शिक्षा प्रणाली का बहुत अहम हिस्सा है परीक्षा पद्धति तथा मूल्यांकन। यह एक बहुत गंभीर विषय है जिसे कभी भी गंभीरता से लिया ही नहीं जाता। परीक्षाओं में छात्र नकल कर पास हो जाते हैं या फिर अध्यापक छात्रों को परीक्षा में नकल करवाते हैं-ऐसी आलोचना तथा दोषारोपण सदैव होता आया है। एक दूसरे पर दोषारोपण के बजाय नकल की इस बुराई को रोकने के उपाय सुझाना इन्हें ढूंढना तथा कार्यान्वित करना ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है। यह एक यक्ष प्रश्न ही बना हुआ है कि क्या इस बुराई को समाप्त किया जा सकता है?

नकल एक अपराध नहीं अपितु एक सामाजिक बुराई है तथा ऐसे में इसे सबके सहयोग से ही समाप्त किया जा सकता है। हमारा पाठ्यक्रम ढांचा बड़े पुराने समय से एक ही ढर्रे में काम करता चला आ रहा है जहां कि वार्षिक परीक्षाओं में ज्यादा जोर निबन्धात्मक प्रश्नों पर रहता है। ऐसे में क्या यह आवश्यक नहीं हो जाता कि पाठ्यक्रम में बदलाव लाकर परीक्षा शैली को वस्तुनिष्ठ तथा एम.सी.क्यू. (मल्टीपल च्वाइस प्रश्न) पद्धति का कर दिया जाये जहां नकल के लिए कोई गुंजाइश ही न रहे। इसके साथ ही साथ क्या 'ओपन बुक एक्जाम' आधुनिक परीक्षा की जगह नहीं ले सकता जिसके माध्यम से विद्यार्थियों की योग्यता व प्रतिभा का मूल्यांकन किया जा सके? आज के संदर्भ में प्रदेश में पढ़ाया जा रहा विभिन्न विषयों का पाठ्यक्रम न केवल नीरस है बल्कि व्यावहारिकता के पैमाने पर कहीं खरा नहीं उतरता तथा इससे कोसो दूर है। अत: पूर्व में कुछ विषयों के पाठ्यक्रम में किया गया बदलाव बिना किसी विचार विमर्श के बच्चों पर लाद दिया गया है।

**परीक्षा सुधार के लिए आवश्यक है कि परीक्षा केन्द्र के लिए जो शर्तें व पैमाना इनके खोलने के लिए तय किया गया है इसमें भी बदलाव किया जाना चाहिए।**

विद्यार्थियों का समग्र मूल्यांकन अर्थात 'कांटिनिअस एण्ड काम्प्रीहैन्सिव इवेल्यूएशन' किया जाना अति आवश्यक है जिसके लिए वर्ष भर 'क्लास टैस्ट' तथा 'टर्म एग्जाम' निर्धारित किये जाने चाहियें। इसके साथ ही विद्यालय तथा श्रेणी में विषयवार बच्चे की उपस्थिति उसका आचरण सम्बन्धी पहलू ही कुल मिलाकर अध्यापकों द्वारा दी जाने वाली 'इंटरनल असेसमेंट' के अंकों का निर्धारण करती है।

परीक्षा सुधार के लिए आवश्यक है कि परीक्षा केन्द्र के लिए जो शर्तें व पैमाना इनके खोलने के लिए तय किया गया है इसमें भी बदलाव किया जाना चाहिए। बहुत से परीक्षा केन्द्र ऐसे स्थानों पर दिये गये हैं जहां बहुत से प्राइवेट विद्यार्थी परीक्षा केन्द्र भरते ही इसीलिये है कि वे 'पास' करने या करवाने के गारंटीशुदा परीक्षा केन्द्र हैं, इन परीक्षा केन्द्रों में बहुत से सिफारिश परीक्षार्थी ही 'अपीयर' होते हैं तथा परीक्षा अधीक्षक तथा उप-अधीक्षक भी 'डिमांड' पर लगाये जाते हैं। ऐसे परीक्षा केन्द्रों पर बोर्ड द्वारा नियुक्त तथा अन्य उड़नदस्ते व निरीक्षण दल भी नहीं पहुंच पाते। ऐसे में आवश्यक हो जाता है कि प्राइवेट परीक्षार्थियों के लिए परीक्षा केन्द्र गिने चुने स्थानों पर ही हों ताकि नकल का बोलबाला ऐसे परीक्षा केन्द्रों में न रहे। बोर्ड की परीक्षाओं में कार्य करने से बहुत से मेहनती, कर्तव्यनिष्ठ, ईमानदार, आत्म सम्मान वाले अध्यापक अपने को दूर रखना बेहतर समझते हैं, कारण चाहे कुछ भी हों लेकिन इन कमियों को दूर करके कारणों की तह तक जाना होगा ताकि बोर्ड कार्य से ऐसे योगय अध्यापक वंचित न रहें तथा ऐसे कार्य से भी स्वयं को जोड़ने में गौरवान्वित महसूस करें। बोर्ड परीक्षाओं में बार-बार ड्यूटी लगाने अथवा लगवाने वाले अध्यापक भी संदेह के घेरे में आ खड़े होते हैं तथा उन्हें उनके ही साथी तथा समाज 'प्रोफेशनलज' के विशेषण से अलंकृत करते हैं। परीक्षा सुधार के लिए अति आवश्यक हो जाता है किसब अध्यापक इसकी कमियों को ढूंढकर, उनके उपाय तलाश तथा अमलीजामा पहनाकर इस कार्य में सहयोग करें।

परीक्षा सुधार से ही जुड़ा विषय मूल्यांकन का भी है। कई परीक्षार्थी न जाने कहां से मूल्यांकन केन्द्रों तथा यहां तक कि मूल्यांकन करने वाले अध्यापकों का नाम, पता, ठिकाना ढूंढ लेते हैं तथा रही-सही कमी मूल्यांकन केन्द्र पर पहुंचकर सिफारिश तथा कई अन्य साधनों से पूरी करवा लेते हैं। ऐसे में पुनर्विचार किया जाना चाहिए कि हर स्तर पर 'अति गोपनीयता' रखने के बावजूद परीक्षा केन्द्र से या फिर डाकखाने से ही (जहां तक नाम पता अंकित रहता है) अन्यथा शिक्षा बोर्ड कार्यालय स्तर पर जहां 'सिकरेसी' अथवा गोपनीय रोल नम्बर लगाने के बावजूद परीक्षार्थी मूल्यांकन केन्द्रों तक आ धमकते हैं, कारण तलाशना अति आवश्यक है। हर स्तर पर नैतिक मूल्यों का पतन, भ्रष्टाचार, चरित्रहीनता समाज के पतन का ही संकेत है। अध्यापन जैसे पवित्र कार्य को तथा 'गुरु' शब्द की महिमामंडन का ह्रास व पतन किसी भी समाज के लिए घातक हैं व पतन का ही संकेत है।

## जन संसद जन संसद जन संसद

### जोहड़ का पानी पीने को विवश

मैं गिरिराज साप्ताहिक के माध्यम से सरकार का ध्यान जिला सिरमौर की तहसील संगडाह के ग्राम पंचायत दाना-घाटों के उप-गांव कैल में पिछले छह सालों से निर्माणाधीन उठाऊ पेयजल योजना की ओर दिलाना चाहता हूं। इस योजना के तहत बनाये गये टैंक आदि बने लगभग चार वर्ष हो चुके हैं जो उपयोग में न लाने के कारण नष्ट होने की कगार पर है। इस योजना से बोलधार, चन्दोलीधार, मौथ, बुराईल आदि क्षेत्रों को पीने का पानी मिलना था। परन्तु योजना के पूरा न होने से लोग आज भी जोहड़ का पानी पीने को विवश है।

अत: आपसे निवेदन है कि ग्राम कैल में निर्माणाधीन पम्प हाऊस का कार्य शीघ्रातिशीघ्र पूरा किया जाये।

**प्रीतम सिंह चौहान,**
**प्रधान ग्राम पंचायत, दाना-घाटों।**

### नहीं मिल पाया सही मुआवजा

मैं प्रदेश सरकार का ध्यान शिमला जिले की तहसील रामपुर के अंतर्गत ननखड़ी उपतहसील में गत वर्ष भारी वर्षा से हुई क्षति की ओर दिलाना चाहता हूं। सरकार द्वारा कृषकों को उनकी भूमि, रिहायशी मकानों, गऊशालाओं को हुए नुकसान की भरपाई के लिए सही मुआवजा नहीं मिल पाया है। इससे अनेक परिवारों को पुन: अपनी सम्पत्ति की बहाली में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। कुछ परिवार ऐसे भी हैं जो नौकरी पेशे की वजह से गांव से बाहर रहते हैं। उन्हें आज तक मुआवजा नहीं मिल पाया है। मेरा प्रदेश सरकार तथा जिला प्रशासन से अनुरोध है कि क्षेत्र में पुन: क्षति का आकलन करवाया जाये ताकि शेष रहे परिवारों को क्षति के अनुसार सही मुआवजा प्राप्त हो सके। इसके अतिरिक्त क्षतिग्रस्त स्थलों पर भू-संरक्षण के लिए लगाई जा रही दीवारें भी जल्दबाजी में लगाई जा रही है। इनका निरीक्षण करने कोई भी नहीं आ रहा है तथा इसका ठेका क्षेत्र के बड़े लोगों को मिला है। कार्य देखकर लगता है कि यह बरसात में पुन: गिर जायेगी।

अत: कार्य की देखरेख के लिए उच्च स्तरीय कमेटी का ननखड़ी क्षेत्र का दौरा होना चाहिए ताकि सरकारी पैसे की बर्बादी को रोका जा सके।

**ननखड़ी रमीत सिंह**

### युवाओं का तकनीकी सशक्तिकरण करें

मैं गिरिराज साप्ताहिक के माध्यम से सरकार का ध्यान हिमाचल प्रदेश में लग रहे उद्योगों की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। हिमाचल प्रदेश सरकार की नीति के अनुसार हिमाचल प्रदेश में लगने वाले उद्योगों में 70 प्रतिशत रोजगार हिमाचल प्रदेश के स्थायी निवासियों को देना अनिवार्य बनाया गया है। ऐसा करने से हिमाचल प्रदेश में बेरोजगारी की समस्या को काफी हद तक हल करने में सहायता मिलेगी। वास्तव में ऐसा हो नहीं रहा है क्योंकि हिमाचल प्रदेश में लगने वाले उद्योगों को तकनीकी रूप से दक्ष युवा शक्ति नहीं मिल रही है। मैं हिमाचल प्रदेश सरकार से अनुरोध करना चाहता हूं कि वह विशेषज्ञों की एक कमेटी गठित करें जो उद्योग मालिकों से विचार विमर्श करके पता लगायें कि उन्हें किन- किन ट्रेडों में दक्ष युवा शक्ति की आवश्यकता है। उन ट्रेडों का हिमाचल प्रदेश में पढ़ी जाने वाली अखबारों में प्रचार किया जाये ताकि हिमाचल प्रदेश के युवा उन ट्रेडों में प्रशिक्षण प्राप्त करके तकनीकी रूप से दक्ष बनें। सरकार से भी अपेक्षा है कि वह हिमाचल प्रदेश के आई.टी.आई. संस्थानों में उद्योगों की मांग के अनुसार ट्रेड चलाकर युवा शक्ति का तकनीकी सशक्तिकरण करें।

उपरोक्त कदम उठाने से हिमाचल प्रदेश को औद्योगिकरण का वास्तविक लाभ मिल सकेगा। आशा है कि हिमाचल प्रदेश सरकार इस दिशा में उचित कदम उठायेगी।

**रिकांगपिओ सुरेन्द्र कुमार**

### डाकघरों में सुविधाओं का अभाव

मैं गिरिराज साप्ताहिक के माध्यम से डाक विभाग के अधिकारियों का ध्यान ग्रामीण शाखा डाकघरों में सुविधाओं के अभाव की ओर दिलाना चाहता हूं। इन डाकघरों में समय सारिणी का सूचना पट्ट न लगाये जाने के फलस्वरूप आम आदमी को दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। साथ ही ग्राम डाकघरों में पोस्टल ऑर्डर की सुविधा भी उपलब्ध करवाई जानी चाहिए ताकि ग्रामीण युवाओं को रोजगार के लिए आवेदन करते समय पोस्टल आर्डर खरीदने हेतु शहर न जाना पड़े। कृपया उपरोक्त सुविधाएं शीघ्र उपलब्ध करवायें।

**झुन्गा, सिरमौर चतर ठाकुर**

कहानी

# रानो

व्यापारी को जाता देख किसी के मुंह से अनायास ही ये शब्द निकल पड़े, ऐसे निर्दयी मनुष्य से तो ये पशु सौ गुना अच्छे हैं, जिनके हृदय में इतना स्नेह व सहनशीलता भरी है।

» रीता शर्मा

विक्रम चाचा के देहांत के बाद कृष्णा चाची को घर चलाना मुश्किल हो गया। एक-एक करके सारे जेवर बिक गये। अकेली होती तो जैसे- तैसे गुजारा कर भी लेती। परन्तु उसके साथ उसके दो बेटे राजू और छोटू भी थे, जिन्हें वह पढ़ा-लिखाकर सैनिक बनाना चाहती थी। कृष्णा चाची ने एक गाय पाल रखी थी। जिसे वे प्यार से रानो बुलाती थी। रानो भी कृष्णा चाची के पैरों की आहट सुनते ही अम्मा... कहकर रम्भाना शुरू कर देती थी। रानो कृष्णा चाची के मां-बाप द्वारा शादी में दी गई गाय थी। इसलिए चाची उसे अपने मां-बाप की निशानी समझती थी। वह दिन में दस-दस बार गऊशाला जाकर रानो से बातें करती व अपने सारे सुख दुख रानो से बांटती। कृष्णा चाची के पास बहुत अधिक जमीन नहीं थी। इसलिए वे सारा दिन रानो को बाहर चराने ले जाती। ताकि अपनी जमीन का घास वर्षा के दिनों के लिए बचा कर रख सके।

अब कृष्णा चाची रानो को लेकर बहुत खुश थी। क्योंकि रानो मां बनने वाली थी। घर में पूरे तीन वर्षों बाद दूध घी के दर्शन होने वाले थे। राजू और छोटू भी चुपके- चुपके गऊशाला हो आते। कृष्णा चाची चाहती थी कि रानो के बछिया हो ताकि कल को घर में गऊएं बढ़ें। क्योंकि चाची के पास दूध घी बेचने के अलावा आय का कोई और साधन नहीं था। प्रतिदिन की तरह जैसे ही आज सुबह कृष्णा चाची गुनगुनाती हुई गऊशाला पहुंची तो रानो के साथ खड़ी बछिया को देखकर उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। वे भागी- भागी घर आईं और अपने दोनों बेटों को ये खुशखबरी सुनाई। दोनों बेटे ये सुनते ही एकदम गऊशाला पहुंचे। आज कृष्णा चाची के घर में खुशी का माहौल था। गांव के सभी लोग आकर चाची को बधाई दे रहे थे। चाची तो आज फूली नहीं समा रही थी। राजू और छोटू ने रानो की बछिया का नाम भोली रखा। भोली जो देखने में बिल्कुल अपनी मां की तरह खूबसूरत थी।

कृष्णा चाची अपने दोनों बेटों को खूब दूध, घी व दहीं खिलाती ताकि वे लम्बे तगड़े नौजवान बनें और सेना में भर्ती हो जायें। दूध, घी बेचकर घर का खर्चा चलाना अब आसान हो गया था।

एक दिन कृष्णा चाची दूध बेचकर घर वापिस आ रही थी कि जोर की बारिश शुरू हो गयी। कृष्णा चाची इस बारिश में क्या भीगी कि उन्हें बुखार आ गया। बुखार था कि उतरने का नाम ही नहीं ले रहा था। इसी दौरान चाची को अधरंग हो गया। वे एक जिंदा लाश बन गईं। उधर रानो और भोली कृष्णा चाची को गऊशाला में न देखकर व्याकुल हो गईं। वे पूरी-पूरी रात अम्मा...कहकर रंभाती रहतीं। पूरा दिन दरवाजे पर एकटक लगाये देखती रहतीं। राजू और छोटू गऊशाला में जाकर रानो और भोली को घास पानी रख आते तथा दूध दूह कर ले आते। रानो ने घास पानी लेना छोड़ दिया। वह सोच रही थी कि आखिर बात क्या है। अम्मा कहां चली गई हैं। जैसे-जैसे दिन बीतते जा रहे थे रानो की चिंता भी बढ़ती जा रही थी। दूसरी तरफ कृष्णा चाची के स्वास्थ्य में कोई सुधार नजर नहीं आ रहा था। नजदीक के वैद्य तो जैसे चाची की बीमारी के आगे हार ही गये थे।

अब गांववालों ने सामर्थ्य अनुसार सौ-दो सौ रुपये प्रति घर डालकर कृष्णा चाची के ईलाज के लिए सात-आठ हजार रुपये इकट्ठे कर लिये और शहर के अच्छे अस्पताल में ले जाने की सोचने लगे। राजू और छोटू ये सब देखकर सोचने लगे कि हमें भी अपनी मां के ईलाज के लिए अपनी तरफ से कुछ धन लगाना चाहिए। परन्तु उनके पास रानो के अतिरिक्त कुछ न था। इसलिए उन दोनों ने रानो और भोली को बेचने का निर्णय कर लिया। वे पास के गांव के एक व्यापारी के पास गये और रानो और भोली को बेचने की बात कही। व्यापारी उसी वक्त उन दोनों के साथ भोली और रानो को देखने व मोल भाव करने आ गया।

गऊशाला से बाहर खड़े होकर वे आपस में बातें कर रहे थे। अंदर रानो और भोली कान लगाकर सुन रही थीं। राजू कह रहा था कि मां को रानो और भोली अपनी जान से भी ज्यादा प्यारी हैं। उन्होंने इन्हें अपने बच्चों की तरह पाला है। मां अगर स्वस्थ होंती तो हम कभी भी इन्हें न बेचते। परन्तु अपनी मां के ईलाज के लिए आज हमें यह कठोर कदम उठाना पड़ रहा है। अगर कभी भगवान की कृपा से हमारे पास धन हुआ तो इन्हें अवश्य ही खरीद कर वापिस ले आयेंगे। आपसे एक प्रार्थना है कि आप जहां कहीं भी इन्हें बेचें उसका पता अवश्य अपने पास रख लें। क्योंकि जब हमारी मां स्वस्थ होकर घर लौटेंगी तो वे इन्हें अवश्य ही ढूंढेंगी। रानो और भोली ये सब बातें सुनकर सहम गईं। व्यापारी ने अंदर जाकर दोनों को जांचा-परखा व पांच हजार रुपये में बात पक्की कर ली। जैसे ही राजू और छोटू ने रानो और भोली को खूंटे से खोला उन दोनों ने एक दूसरे की तरफ देखा व भागकर कृष्णा चाची के पास पहुंच गईं।

कृष्णा चाची को बाहर बरामदे में बिस्तर पर लेटाया गया था ताकि सर्दियों में कुछ देर धूप लगने से शरीर में कुछ तप्त सी आ जाये। वे दोनों जाकर कृष्णा चाची को निहारने लगीं। उन भोले पशुओं की मूक प्यार को देखकर सभी स्तब्ध रह गये। वे दोनों अपनी जिह्वा से चाची के हाथों को सहलाने लगीं। उन दोनों की आंखों से आंसू बह रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे कि पशु की खाल में ये दोनों कृष्णा चची की अपनी बेटियां हैं। जो ससुराल से अपनी मां को देखने आई हैं। व नन्हीं सी बछिया तो किसी फरिश्ते से कम नहीं लग रही थी। इतने में व्यापारी भी वहां पर आ पहुंचा। वह उन दोनों को रस्सियों से खींचने लगा। परन्तु उन दोनों ने तो जैसे वहां से न हिलने का प्रण ले लिया हो। वे दोनों अपनी अम्मा को इस हालत में छोड़कर नहीं जाना चाहती थीं। व्यापारी की बहुत कोशिशों के बाद भी जब वे वहां से नहीं हिलीं तो व्यापारी को गुस्सा आ गया। उसने अपनी लाठी उठाकर उन्हें पीटना शुरू कर दिया। अब वे दोनों जमीन पर बैठ गईं व उन्होंने अपनी आंखें बंद कर लीं और अपने सिर कृष्णा चाची के बिस्तर पर रख दिये। रानो ने फिर से चाची का हाथ अपनी जिह्वा से सहलाना शुरू कर दिया। रानो को देखकर भोली भी वही करने लगी। उस दृश्य को देखकर सबकी आंखों में आंसू आ गये। लग रहा था मानो वे दोनों कह रही हों कि हे कृपा सिंधु परमपिता परमात्मा हमारी अम्मा को ठीक कर दो। दूसरी तरफ व्यापारी उनके गले में पड़ी रस्सियों से खींचता जा रहा था और लाठियां बरसाता जा रहा था। जब राजू और छोटू से व्यापारी का ये बर्ताव देखा न गया तो उन्होंने उसे रोकते हुए कहा कि आप कृपया करके मासूम भोले मूक पशुओं पर ऐसा अत्याचार मत कीजिए। इसका व्यापारी ने यह कह कर उत्तर दिया कि अब ये दोनों मेरी हैं जो चाहे करूं। मैंने तुम्हें इनकी कीमतो चुका दी है। अब इन्हें जैसे भी हो मेरे साथ भेजों अन्यथा मेरे रुपये मुझे वापिस करो। अब रानो और भोली की मूक प्रार्थना ईश्वर तक पहुंच चुकी थी। धीरे-धीरे कृष्णा चाची के हाथ हिलने लगी। आंखें खुलने लगीं। शरीर की सारी स्फूर्ति वापिस आ गई। उन्होंने जैसे ही भोली और रानो को देखा वे उठ बैठीं और दोनों को बांहों में भर लिया। दोनों की आंखों के आंसू पोंछकर अपनी आंखों के आंसुओं को बहने से न रोक सकीं जो अविरल बहते ही जा रहे थे। सभी लोग यह चमत्कार देखकर हैरान थे। राजू ने व्यापारी को उसके पांच हजार रुपये वापिस लौटा दिये। रानो भी ये सब देखकर खुशी से अम्मा... कहकर जोर से एक बार पुन: रम्भाई। राजू और छोटू भी अपनी मां को स्वस्थ देखकर खुशी से मां के गले लग गये। व्यापारी को जाता देख किसी के मुंह से अनायास ही ये शब्द निकल पड़े, ऐसे निर्दयी मनुष्य से तो ये पशु सौ गुना अच्छे हैं, जिनके हृदय में इतना स्नेह व सहनशीलता भरी है।

कविता

## इंसानी फितरत

इंसानी फितरत को समझना
बहुत मुश्किल है आज
छोटी सी जिंदगानी में
दुश्मनी भी पाले
और दोस्तों का भी रखे ख्याल
दुश्मनी करने से
क्या हासिल होगा जमाने में
दोस्त भी वक्त की गुमनामी
में खो जायेगा
और दुश्मन भी चला जायेगा
एक दिन
वक्त से बड़ा कोई नहीं है
दोस्त और दुश्मन सभी है
वक्त के गुलाम
करता हूं फरियाद मैं सबसे यही
अपनों से करो प्यार
जज्बातें का करो इकरार
लेकिन कभी न करो
किसी से तकरार
छोटी सी है जिंदगानी
इसे खुशी से बिताना है जरूरी
किसी के दिल को न करना चोट
वरना जिंदगी में होगा खोट।

■ शेर सिंह मेरुपा

## क्या आप जानते हैं

### भारतीयों की औसतन आयु में वृद्धि

आर्थिक स्थिति की दृढ़ता एवं स्वास्थ्य जागरूकता के कारण भारत में लोगों के स्वास्थ्य में सुधार हो रहा ह, औसत आयु में लगातार वृद्धि हो रही है तथा महिलाएं पुरुषों को पछाड़ रहीं हैं। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार जहां पुरुष औसतन 65.8 वर्ष तक जीवित रह रहे हैं वहीं महिलाएं 68.1 वर्ष तक जीवित रह रहीं हैं। विशेषज्ञों का आकलन है कि वर्ष 2025 तक पुरुष औसतन 69.8 वर्ष और महिलाएं 72.3 वर्ष तक जीवित रहेंगी। इस समय पूरे देश की औसत आयु 66.9 है और आशा की जा रही है कि 2025 तक औसत आयु 72 वर्ष हो जायेगी। औसत आयु बढ़ने के मामले में केरल सबसे आगे है। यहां की औसत आयु 74.4 वर्ष है। दिल्ली वालों की औसत आयु 73.1 वर्ष है और यह दूसरे नम्बर पर है।

1. किस वयोवृद्ध पर्यावरणविद् को हाल ही में पद्म विभूषण प्रदान किये जाने की घोषणा की गई है?
2. हाल ही में प्रधानमंत्री द्वारा किस जगह नवनिर्मित इंडियन नेवल एकेडमी (आईएनए) का उद्घाटन किया गया?
3. भारत के वह तीन विख्यात क्रिकेट खिलाड़ी जिन्हें इस वर्ष 'हाल ऑफ फेम' में सम्मिलित किया गया है?
4. भारत का वह राज्य व मुख्य मंत्री जहां संवैधानिक प्रावधानों के तहत विधानसभा का सदस्य बनने के लिए सम्पन्न हुए एक उपचुनाव में पराजय का सामना करने के कारण मुख्य मंत्री पद से त्यागपत्र देना पड़ा?
5. वह यूरोपियन राष्ट्र जिसे 1 जनवरी, 2009 को यूरोपीय संघ का सदस्य बनाया गया है?
6. किस अनुच्छेद के अधीन उच्चतम न्यायालय को मृत्यु दण्ड को आजीवन कारावास में बदल देने की शक्ति प्राप्त है?
7. भारत में होम रूल आंदोलन किसने चलाया?
8. 'इंटरनेशनल चिल्ड्रेन बुक डे' कब मनाया जाता है?
9. 'सत्यमेव जयते' किस ग्रंथ से उद्धत किया गया है?
10. नांदेड़ में किस सिख गुरु की समाधि बनी है?
11. हिमाचल मे मार्कण्डेय मेला कौन सी जगह आयोजित किया जाता है?
12. चन्द्र और भागा नदियों से कौन सी नदी बनती है?
13. 15 अप्रैल, 1948 को हिमाचल प्रदेश की जनसंख्या कितनी थी?
14. एवरेस्ट पर पहुंचने वाली विश्व की सबसे कम आयु वाली महिला कौन है?

प्रस्तुति-नर्मदा

□□□

उत्तर–1. सुन्दरलाल बहुगुणा, 2. एझिमाला (केरल), 3. बिशन सिंह बेदी, कपिल देव और सुनील गावस्कर, 4. झारखण्ड (शिबू सोरेन), 5. चैक गणराज्य, 6. अनुच्छेद 32, 7. बाल गंगाधर तिलक व ऐनी बेसेंट ने, 8. 2 अप्रैल, 9. मुण्डकोपनिषद् से, 10. गुरु गोविन्द सिंह की, 11. बिलासपुर में 12, 13 व 14 अप्रैल को, 12. चिनाब, 13. 9,35,000 के लगभग, 14. डिक्की डोलमा।

महात्मा गांधी कहा करते थे, 'जब भी मैं किसी कठिनाई में होता हूं। मेरे सामने कोई जटिल व पेचीदा समस्या होती है जिसका समाधान मुझे स्पष्ट रूप से प्रतीत होता है। मैं गीता माता की गोद में चला जाता हूं वहां मुझे कोई न कोई हल व समाधान अवश्य मिल जाता है।

# स्वाध्याय

» अभय कुमार जैन

'श्रुत आराधना ही स्वाध्याय है।' सत् साहित्य स्वाध्याय का महत्व अति प्राचीन काल से ही मान्य रहा है। औपनिषदिक चिंतन में जब शिष्य अपनी शिक्षा पूर्ण करके गुरु के आश्रम से विदाई लेता तो उसे दी जाने वाली अंतिम शिक्षाओं में एक ऐसी शिक्षा होती थी।

'स्वाध्याय मा प्रमद:' अर्थात स्वाध्याय में प्रमाद मत करना। स्वाध्याय एक ऐसी वस्तु है जो गुरु की अनुपस्थिति में भी गुरु का कार्य करती थी। जैन परम्परा में स्वाध्याय का विशेष और महत्वपूर्ण स्थान है। स्वाध्याय का सरल अर्थ अपना अध्ययन (स्व+अध्याय) है परन्तु शब्द की संधि विच्छेद करने से ज्ञात होता है कि स्व+अधि+आय रूप निर्मित शब्द का अर्थ है अपने द्वारा अपनी आत्मा का अध्ययन और आत्म स्वरूप का बोध। चूंकि आत्म बोध की प्राप्ति में शास्त्र अवलम्बन है अत: इसका सीधा अर्थ शास्त्राधययन से लिया जाता है।

स्वाध्याय शब्द की दूसरी व्याख्या सु+आ+अधि+ईड इस रूप में भी की गई है। दृष्टि से स्वाध्याय अर्थात सत् साहित्य का अध्ययन करना ही स्वाध्याय है। स्वाध्याय की उक्त परिभाषाओं के आधार पर जो बात प्रकट होती है वह यह है कि सभी प्रकार का पठन पाठन। जो हमारी चैतासिक विकृतियों के समझने और इन्हें दूर करने में सहायक स्वाध्याय के अंतर्गत आता है।

जैन साधना में स्वाध्याय को महान तप माना गया है तप के बाह्य और आभ्यंतर नाम से दो भेद हैं। शरीर को कष्ट देने स्वाद पर विजय प्राप्त करने के लिए जो तप किये जाते हैं उन्हें बाह्य तप कहते हैं जिसके छ: प्रकार हैं। अनशन ऊनोदरी, भिक्षाचर्या, रस परित्याग काय क्लेश और प्रतिसलीनता। आभ्यंतर तप में मानसिक एकाग्रता और भावों की शुद्धि पर जोर दिया जाता है। उसके भी छ: प्रकार हैं-प्रायश्चित, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय और व्युत्सर्ग। तदनुसार विधिपूर्वक सदशास्त्रों का अध्ययन करना और उनके अनुरूप आचरण करने का प्रयत्न करना स्वाध्याय तप है। स्वाध्याय से मन एकाग्र होता है। विचार शुद्ध बनते हैं और ज्ञान का अभ्यास होता है। इसी प्रकार भगवती सूत्र से प्रभु महावीर ने बताया है कि स्वाध्याय करने से मनुष्य जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य अर्थात परमात्मा स्वरूप को प्राप्त कर सकता है। धर्म श्रवण (स्वाध्याय) से प्राप्त होने वाले लाभ निम्नानुसार हैं:-

**सवणे णाणे व विन्नाडे, पच्चमुखाणे ये सजंभे**
**अणहये तवे चेत वोदाणे अकिरिया सिद्धि**

अर्थात स्वाध्याय से 1. ज्ञान, 2. विशिष्ट तत्व बोध, 3. प्रत्याख्यान (सांसरिक पदार्थों से विरक्ति), 4. संयम, 5. अनाश्रव (नवीन कर्मों का निरोध), 6. तप, 7. पूर्व बद्ध कर्मों का नाश, 8. सर्वथा कर्म रहित स्थिति, 9. सिद्धि (मुक्त स्थिति) की प्राप्ति होती है।

(शेष पृष्ठ 9 पर)

कृपया

प ष्ठ छः-सात

के लिए

सेंटरस्प्रेड देखें

# टमाटर व शिमला मिर्च रोपाई का सही समय

प्रसार शिक्षा निदेशालय, चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर के कृषि एवं पशुपालन वैज्ञानिकों ने अप्रैल, 2009 माह के प्रथम पखवाड़े में किये जाने वाले मौसम पूर्वानुमान सम्बन्धित कृषि एवं पशुपालन कार्यों के बारे में निम्नलिखित सलाह दी है जो किसानों को लाभप्रद साबित होगी।

**मक्की चारे के लिए**

क्षेत्रफल तथा उपज की दृष्टि से मक्की हिमाचल प्रदेश की एक महत्वपूर्ण अनाज की फसल है। इसे चारे के लिए भी उगाया जा सकता है क्योंकि इससे अधिक उपज और अच्छी किस्म का हरा चारा प्राप्त होता है। सिंचाई वाले क्षेत्रों में मौनसून से पहले (मार्च-जून) मक्की को रौंगी या सोयाबीन के साथ उगाकर चारे के लिए एक फसल ली जा सकती है ताकि गर्मियों में हरा चारा उपलब्ध हो सके। अच्छी परिस्थितियों में एक हैक्टेयर से 600 क्विंटल हरा चारा प्राप्त हो सकता है। एक हैक्टेयर के लिए 50-60 किलोग्राम बीज, 174 किलोग्राम यूरिया तथा 375 किलोग्राम सिंगल सुपर फास्फेट खाद डालें। नाईट्रोजन की आधी मात्रा व फास्फोरस की पूरी मात्रा बुआई के समय डालें तथा शेष नाईट्रोजन की मात्रा बुआई के 30-35 दिन बाद डालें।

**सब्जी उत्पादन**

इन दिनों प्रदेश के निचले पर्वतीय क्षेत्रों में जहां पर मार्च महीने के पहले पखवाड़े में या इससे पहले टमाटर, बैंगन, लाल मिर्च, शिमला मिर्च या कद्दू वर्गीय फसलों की रोपाई या बीजाई हुई हो तो वहां पर इन फसलों में नत्रजन की पहली मात्रा डालने का समय है। इन सभी प्रकार की फसलों में निदाई-गुड़ाई करने के पश्चात् 75 किलोग्राम यूरिया या 150 किलोग्राम किसान खाद प्रति हैक्टेयर की दर से खेतों में डालें।

प्रदेश के मध्यवर्ती पर्वतीय क्षेत्रों में यह समय ग्रीष्मकालीन सब्जियों (टमाटर, बैंगन, मिर्च, शिमला मिर्च व लाल मिर्च) के प्रतिरोपण का है। इन क्षेत्रों में इन्हीं दिनों कद्दू वर्गीय फसलों जैसे खीरा, करेला, कद्दू, चप्पन कद्दू व घीया इत्यादि की बीजाई या रोपाई की जा सकती है। इन सभी फसलों की रोपाई से पहले खेतों में 2-3 जुताइयों देशी हल से कर लें। रोपाई के समय टमाटर, बैंगन, शिमला मिर्च व लाल मिर्च में 250 क्विंटल गोबर की खाद, 250 कि.ग्रा. इफ्को (12:32:16), 30 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश तथा 75 किलोग्राम यूरिया खाद तथा कद्दू वर्गीय फसलों में 100 क्विंटल गोबर की खाद, 150 कि.ग्रा. इफ्को (12:32:16) व 60 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश तथा 80 किलोग्राम यूरिया खाद प्रति हैक्टेयर की दर से खेतों में मिलाएं। जिन किसानों ने टमाटर की संकर किस्में लगाई हों वे रोपाई के समय 250 क्विंटल गोबर की खाद के अतिरिक्त 375 किलोग्राम इफ्को (12:32:16), 30 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश व 110 किलोग्राम यूरिया खाद प्रति हैक्टेयर की दर से खेतों में डालें। टमाटर, बैंगन, मिर्च तथा शिमला मिर्च के खेतों में खरपतवारों की समस्या रहती है। खरपतवार नियन्त्रण के लिए किसानों को सलाह दी जाती है कि इन फसलों की रोपाई के 48 घंटे के अंदर लासो/एलाक्लोर 50 प्रतिशत (40 लीटर) या स्टाम्प/ पैण्डीमिथेलिन 4 लीटर प्रति 750 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें। कद्दू वर्गीय फसलों की बीजाई या रोपाई पंक्तियों में 90 सैं. मी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 60 सैं. मी. रखें। इन क्षेत्रों में इन दिनों भिण्डी व फ्रांसबीन की बीजाई भी की जा सकती है। भिण्डी की बीजाई के लिए परभनी क्रान्ति, पी. 8, अर्का अनामिका, संकर तुलसी, पंचाली, यू. एस.-7109 तथा फ्रांसबीन की बीजाई के लिए कन्टेडर, प्रीमियर, अर्का कोमल, फाल्गुनी व वी.एल. बौनी-1 इत्यादि सुधरी प्रजातियों का ही चयन करें। बीजाई के समय भिण्डी में 100 क्विंटल गोबर की खाद, 150 कि.ग्रा. इफ्को (12.32.16), 50 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश व 60 किलोग्राम यूरिया तथा फ्रांसबीन में 200 क्विंटल गोबर की खाद, 310 किलोग्राम इफ्को (12:32:16) प्रति हैक्टेयर की दर से बीजाई के समय खेतों में डालें। प्रदेश के ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों में मटर (आजाद पी. 1, लिंकन, पालम प्रिया), मूली (पूसा हिमानी), शलजम (पी.टी. डब्ल्यू.जी.), गाजर (नान्तीज, चान्तनी), पालक (पूसा हरित) की बीजाई करें। इसके अतिरिक्त फूलगोभी, बन्दगोभी व ब्रॉकली इत्यादि की तैयार पौध की भी खेतों में रोपाई करें।

## अप्रैल माह के दूसरे पखवाड़े में किये जाने वाले कृषि कार्य

**कीट-पतंगें व बीमारियां एवं उनका नियंत्रण**

भिंडी, बैंगन, फ्रांसबीन व कद्दू वर्गीय सब्जियों में कई बार पौधों की आरम्भिक अवस्था में पत्ते खाने वाले कीटों का प्रकोप हो जाता है। यदि इन सब्जियों में कीट प्रकोप से अधिक क्षति होने की आशंका हो तो मैलाथियान 50 ई.सी. नामक कीटनाशक का (750 मि.ली. दवाई 750 लीटर पानी में घोलन बनाकर एक हैक्टेयर क्षेत्र के हिसाब से) छिड़काव करें। बैंगन, टमाटर व शिमला मिर्च आदि सब्जियों में यदि कमरतोड़ रोग के लक्षण दिखाई दें तो इण्डोफिल एम-45 (25 ग्राम) व बैविस्टीन (5 ग्राम) के मिश्रण को 10 लीटर पानी में घोलकर पौध को सींचे।

आलू की फसल में झुलसा रोग के लक्षण (पत्तों पर काले धब्बे) आने पर रिडोमिल एम जैड-70 डब्यू.पी. (1.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से) 15 दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव करें और उसके बाद 7 दिन के अंतर पर डाइथेन एम-45 (2 ग्राम प्रति लीटर पानी में) का छिड़काव करें। आलू के पतंगे की रोकथाम के लिए खेत में साईपरमिथरिन 25 ई.सी. (1 मि.ली. दवाई प्रति लीटर पानी में) का छिड़काव करें।

**पशुधन**

अपने पशुओं के लिए हरे चारे का उचित प्रबन्ध करने के लिए सिंचित क्षेत्रों में मक्का व मकचरी में लोविया या सोयाबीन की मिश्रित बिजाई कर दें ताकि मई के मध्य तक हरा चारा उपलब्ध हो सके। यदि आप पशुओं को सूखे घटिया चारे जैसे भूसा, मक्की का टांडा या धान का पराल खिला रहे हैं तो प्रत्येक पशु को प्रतिदिन 40 ग्राम की दर से खनिज मिश्रण अवश्य खिलायें। यह भी ध्यान रखें कि दाना मिश्रण में मक्की के साथ जौ या गेहूं का प्रयोग हो।

वातावरण में अचानक तबदीली आ रही है। अतः पठौरी मुर्गी व चूजों के तापमान नियंत्रण हेतु उचित प्रबन्ध करें। गर्भित खरगोशों से बच्चे यदि प्राप्त हो जायें तो उनका मां से दूध पीना उनके पेट को देखकर सुनिश्चित कर लें क्योंकि मां 24 घंटे में केवल एक बार ही दूध पिलाती है। मछली का अच्छा उत्पादन लेने हेतु तालाबों में खुराक व गोबर का डाला जाना सुनिश्चित कर लें। यदि पशुओं को खुरमुंही रोग का प्रकोप व्याप्त हो गया है तो पशु चिकित्सक से यथा संभव जल्दी परामर्श करें व तुरंत पशुओं को अलग कर दें व बताये गये तरीकों अनुसार पशुओं के खुरों व मुंह के जख्मों पर उचित दवाइयों का प्रयोग करें और ध्यान रखें कि मक्खियां जख्मों के आसपास अण्डे न देने पायें।

किसान भाइयों एवं पशु पालकों से अनुरोध है कि वे अपने क्षेत्र की भौगोलिक तथा पर्यावरण परिस्थितियों के अनुसार अधिक एवं अति विशिष्ट जानकारी हेतु नजदीक के कृषि विज्ञान केन्द्र से सम्पर्क बनाए रखें।

**निदेशक,**
**प्रसार शिक्षा,**
**चौ.स.कु. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर।**

# उचित मात्रा में करें उर्वरकों का प्रयोग

बागबान भाई जानते हैं कि पौधे की सुषुप्तावस्था के दौरान उनकी निदाई, गुड़ाई और आवश्यक कांट-छांट की जाती है ताकि जब उसमें बसन्त आने पर जीवन का नवसंचार हो तो वह पहले से स्वस्थ व निरोग होने लगे। इसके साथ यह भी उतना ही आवश्यक है कि उसमें खाद व उर्वरक उचित मात्रा में डाले जायें। उर्वरकों को पेड़ के लिए तौलिये में डालने की उचित विधि का पता होना अत्यावश्यक है।

पौधों में खाद व उर्वरकों का प्रयोग उसकी आयु पर निर्भर करता है। एक कुशल बागबान ही जानता है कि उसे अपने पेड़ पौधों में कितनी मात्रा में खाद डालनी चाहिए। हिमाचल प्रदेश में शीतोषण फलों में सेब का प्रमुख स्थान है। अतः यह पता होना चाहिए कि सेब के पौधे और पेड़ों में किस मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग किया जाये। इन उर्वरक व खादों में गोबर की खाद, नत्रजन, केन, फास्फोरस, सुपर फास्फेट, पोटाश व म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रमुख है।

सामान्यतः एक वर्ष के पौधे में 10 किलोग्राम गोबर की खाद (गली सड़ी), (70 ग्राम नत्रजन), (280 ग्राम केन), 35 ग्राम फास्फोरस (220 ग्राम सुपर फास्फेट), 70 ग्राम पोटाश (115 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) डालने की सिफारिश की जाती है। इस मात्रा को प्रतिवर्ष उपरोक्त मात्रा में बराबर बढ़ाते रहना चाहिए यानि दो वर्ष के पौधे में 20 किलोग्राम गोबर खाद, 70 ग्राम फास्फोरस, 440 ग्राम सुपर फास्फेट तथा 235 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश डालनी है। अगले दस वर्षों तक इस क्रम को इसी अनुपात में बढ़ाते रहना चाहिए। इसके पश्चात इस मात्रा को स्थिर करना चाहिए। जिस वर्ष फल न लगते हों उस वर्ष इस मात्रा को कम किया जा सकता है।

खाद पौधों के तौलिये में डाली जाती है। बागबान अनजाने में खाद को पौधे के समूचे तौलिये (तने से लेकर बाहर तक पूरे विस्तार से) बिखेर देते हैं। खाद डालने से पूर्व तौलिये की गुड़ाई की जाती है और उसके बाद बड़े पेड़ों के तने से बाहर की ओर 30 सेंटीमीटर की दूरी पर खाद डालनी चाहिए। आमतौर पर खाद इससे दूरी से चारों ओर नाली बनाकर डालनी चाहिए। खाद डालने से पूर्व कुछ और महत्वपूर्ण बातों की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए जैसे

**खाद पौधों के तौलिये में डाली जाती है। बागबान अनजाने में खाद को पौधे के समूचे तौलिये पर बिखेर देते हैं। खाद डालने से पूर्व तौलिये की गुड़ाई की जाती है**

- पत्ती विश्लेषण और भूमि की मिट्टी परीक्षण रिपोर्ट के आधार पर उर्वरकों की मात्रा को बढ़ाया या घटाया जा सकता है।
- सुषुप्तावस्था के दौरान गोबर की खाद सबसे अधिक लाभदायक है। इसके साथ-साथ पोटाश व फास्फोरस भी डालनी चाहिए।
- खाद डालने से पूर्व यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि तौलिये की भूमि न तो अधिक गीली हो और न ही अधिक सूखी।
- फास्फोरस को प्रतिवर्ष डालना आवश्यक नहीं होता। अतः इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि बागबान अनजाने में हर वर्ष इसका खूब प्रयोग करते हैं।
- जिन बागीचों में खूब फलोत्पादन होता है उसमें फल तुड़ान के बाद एक प्रतिशत यूरिया का छिड़काव अवश्य करना चाहिए।

खाद व उर्वरकों का प्रयोग करते समय अपने निकटतम क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों के विशेषज्ञों व बागबानी विभाग के तकनीकी विशेषज्ञों से अवश्य ही सलाह लेनी चाहिए।

**–टेक चन्द ठाकुर**

# सोयाबीन की उन्नत काश्त विधि

सोयाबीन दुनिया भर में खाद्य तेल और उच्च गुणों वाले प्रोटीन का मुख्य स्रोत है। उच्च गुणवत्ता वाली प्रोटीन और तेल का सबसे सरल और सस्ता स्रोत है। सोयाबीन लेग्युमिनस कुल का होने के कारण वायुमण्डलीय नाइट्रोजन का जमीन में स्थिरीकरण करता है और अतिरिक्त नाइट्रोजन प्रदान कर जमीन की उर्वरा शक्ति को बढ़ाता है। किसी भी अन्य फसलों की तुलना में सोयाबीन में प्रति एकड़ अधिक उपयोग युक्त प्रोटीन होते हैं, जिसमें 20 प्रतिशत असंतृप्त तेल और 40 प्रतिशत उच्च गुणों वाली प्रोटीन होती है।

सोयाबीन के लिए उत्तम जल निकास वाली डोरसा और कन्हार जमीन उपयुक्त है। सोयाबीन में सूखा और जल सहने करने की क्षमता होती है। भरी खेतों के साथ-साथ धान की असिंचित महावी जमीन पर जल की व्यवस्था कर सोयाबीन की खेती कर सकते हैं और अधिक लाभ कमाया जा सकता है। भूमि की तैयारी मक्का, उड़द और मूंग की तरह ही करते हैं। सोयाबीन के लिए कम ढेले वाली भुरभुरी जमीन अच्छी होती है। मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई करके हैरो चलाकर मृदा को भुरभुरा बनाया जाता है। वर्षा प्रारम्भ होने पर दो बार खेत की जुताई करके कचरा साफ कर देना चाहिए, जिससे खेत निंदा रहित हो। बुआई के लिए जुलाई का महीना उपयुक्त होता है।

**बोने की विधि**

सोयाबीन की बुआई छिटकवां या सीडड्रील या हल के पीछे पंक्तियों में बोया जा सकता है। छिटकवां विधि हरे चारे की फसल के लिए उपयुक्त है। बीजों को पंक्तियों में बोना अत्यंत महत्वपूर्ण और लाभदायक है क्योंकि इससे पौधों को वृद्धि के लिए आवश्यक चीजें जैसे प्रकाश, स्थान, पोषक तत्व व जल समान रूप से मिलता है एवं पौधों के बीच अनावश्यक प्रतियोगिता कम हो जाती है। फसलों की बुआई के समय कतार से कतार की दूरी 30 से 40 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 3 से 5 सेंटीमीटर होनी चाहिए। प्रत्येक 18 कतारों के बाद एक लाईन खाली छोड़नी चाहिए जिससे जल निकास किया जा सके।

**बीजोपचार**

बीज बोने से पहले उसे थाइरम या बाविस्टिन 3 से 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से उपचारित करना चाहिए। बुआई के बीजों को स्वस्थ होना अत्यंत आवश्यक है। फफूंदनाशी से उपचारित बीज में राइजोबियम कल्चर का टीका लगाना चाहिए। राइजोबियम कल्चर से उपचार के लिए बीजों को 10 प्रतिशत गुड़ या शक्कर का घोल बनाकर पांच ग्राम प्रति किलो बीज के अनुसार मिश्रित करना चाहिए। तत्पश्चात बीजों को छायादार स्थान में सुखाने के बाद उसकी बुआई करनी चाहिए। कल्चर के मिलाने के दो-तीन घंटे बाद ही बीजों की बुआई करनी चाहिए।

**बीज मात्रा**

बीज की मात्रा बुआई के समय पर निर्भर करती है। जल्दी बुआई के लिए प्रति एकड़ 30 से 35 किलो और देरी से बुआई के लिए 40 से 45 किलो बीज की आवश्यकता होती है।

**उर्वरक**

यह मालूम करने के लिए कि किसी खाद की कितनी मात्रा डाली जाये मृदा का परीक्षण करना चाहिए। राइजोबियम कल्चर के प्रयोग से नाइट्रोजन की मात्रा कम लगती है। प्रति एकड़ नाइट्रोजन 15 किलो, फास्फोरस 30 किलो और पोटाश 20 किलो की आवश्यकता होती है।

**सिंचाई**

खरीफ में खेती होने से इसे अतिरिक्त सिंचाई की आवश्यकता नहीं, परन्तु वर्षा न होने पर सिंचाई करना आवश्यक है। सोयाबीन में क्रांतिक अवस्थाएं फूलने और फल आते समय, दानों के भरने और विकास के समय सिंचाई देना बहुत जरूरी है।

**खरपतवार नियंत्रण**

सोयाबीन की फसल में कुछ खरपतवारों का प्रकोप अधिक होता है, जिसमें सीवा, मोथा, दूब, जंगली चौलाई, चकौरी आदि प्रमुख है। सोयाबीन का पौधा अपनी आरम्भिक अवस्था में खरपतवारों से मुकाबला नहीं कर सकता। अतः 30 से 35 दिन में दो बार हाथों से निंदाई करना चाहिए। एक लीटर बासालीन या स्टोप प्रति एकड़ बुआई या बुआई के तुरंत बाद प्लेट फेन नोजल से छिड़काव करना चाहिए।

**कटाई**

सोयाबीन की फसल 90 से 140 दिनों में पककर तैयार होती है। जब पत्तियों का रंग पीला हो जाये और गिसा चालू हो जाये तब फसलों की कटाई का समय उपयुक्त होता है। कटाई की देरी से दानें झड़ सकते हैं।

**उपज**

सोयाबीन की फसल से 12 से 16 क्विंटल, एक एकड़ तक उपज प्राप्त की जा सकती है।

**–नरेन्द्र देवांगन**

लघुकथा

# अनोखी उदारता

**परीक्षा फल घोषित होने पर मालूम हुआ कि राज बहादुर प्रथम आया है और सत्यपाल पहले की तरह द्वितीय।**

कलकत्ता में राज बहादुर और सत्यपाल नाम के दो बुद्धिमान लड़के पढ़ते थे। प्रतिवर्ष उनमें से राज बहादुर प्रथम और सत्यपाल द्वितीय श्रेणी में पास हुआ करता था...।

एक बार राज बहादुर की माता सख्त बीमार हो गई। इसी कारण परीक्षा का निकट समय होने पर भी राज बहादुर लगातार दो महीने तक पाठशाला नहीं आ सका। सभी को यह विश्वास हो गया कि अब राज बहादुर प्रथम श्रेणी में किसी भी प्रकार नहीं आ सकता है। परीक्षा के 15 दिन पहले माता की मृत्यु भी हो गई जिससे भी वह बहुत दुखी हुआ तथा परीक्षा के दिन ही पाठशाला जा सका। परीक्षा फल घोषित होने पर मालूम हुआ कि राज बहादुर प्रथम आया है और सत्यपाल पहले की तरह द्वितीय। अध्यापक और सभी विद्यार्थियों को यह देखकर बड़ा अचम्भा हुआ। अध्यापक ने सत्यपाल की उत्तर कापी देखी तो ज्ञात हुआ कि कुछ उत्तर जो बिल्कुल सरल थे वे सत्यपाल ने नहीं लिखे थे।

शिक्षक ने सत्यपाल से पूछा, 'इतने सरल प्रश्नों के उत्तर क्यों नहीं लिखे?' सत्यपाल ने उत्तर दिया, 'मान्यवर! राज बहादुर की माता मर गई है। इस कारण वह दो महीने से कुछ भी तैयारी नहीं कर सका। इससे मुझे प्रथम श्रेणी में आने का अवसर मिल रहा था, पर मुझे यह अनुचित जान पड़ा। अत: मैंने जानबूझ कर सरल प्रश्नों के उत्तर नहीं लिखे हैं, क्योंकि किसी भी विवशता से अनुचित लाभ उठाना पाप है...।

सत्यपाल की अनोखी उदारता और दयालुता को देखकर सभी लोग आश्चर्यचकित रह गये। शिक्षक ने कहा, 'बेटा! तुम उदारता और सज्जनता की महत्वपूर्ण परीक्षा में प्रथम आये हो। इनके आगे पाठशाला की परीक्षा कुछ भी महत्व नहीं रखती।

**अर्चना सौगानी**

लघु कहानी

# चींटी और हाथी

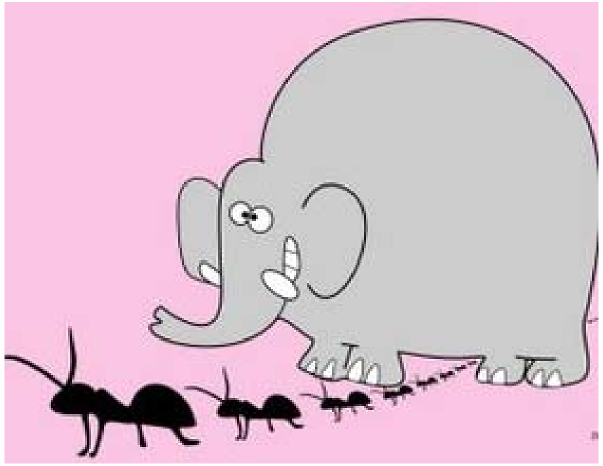

एक जंगल में हाथियों की एक टोली रहती थी। सायंकाल के समय जब वे अपने घरों को लौटते तो रास्ते में अनजाने में ही चींटियों के घरों को रौंदते चले जाते। इससे चींटियों के कई परिवार काल का ग्रास बन गये थे। एक दिन सभी चींटियों ने एकत्रित होकर एक बैठक का आयोजन किया। बैठक में पहले दिवंगत आत्मओं की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया। उनके उपरांत कार्यवाही आरम्भ की गई। बैठक में विचार व्यक्त किया गया कि यदि इसी प्रकार हाथियों द्वारा चींटियों को नुकसान पहुंचाना जारी रहा तो एक दिन उनका इस बस्ती से नामोनिशान मिट जायेगा। सभी ने अपनी- अपनी राय व्यक्त की। एक चींटी अपना चश्मा हाथों से ठीक करते हुए बोली, 'अन्याय सहन करना भी एक जुर्म है. ..कब तक सहोगे...? मेरी राय है हमारा एक प्रतिनिधिमण्डल हाथियों की बस्ती में जाकर उन्हें अपनी समस्या से अवगत कराये...वे अवश्य हमारी प्रार्थना सुनेंगे...।'

इस पर एक अन्य चींटी तपाक से खड़ी होकर मुंह पिचकाकर बोली, 'लेकिन उनके पास जायेगा कौन...? पल भर में मसल कर रख देंगे वे... वे इतने बड़े बलशाली...? हम कमजोर.. .उनके आगे हमारी क्या बिसात...? ये तो शेर की मांद में हाथ डालने वाली बात हुई...न बाबा न। मुझे यह सुझाव पसन्द नहीं...।' इतना कहकर वह आंखें तरेरती हुई बैठ गई। बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे? कुछ क्षणों के लिए सभा में सन्नाटा छा गया। तभी एक व्योवृद्ध चींटी ने पहले खांसकर अपना गला साफ किया फिर खड़ी होकर कांपती आवाज में बोली, 'देखिये, यह एक विकट समस्या है... कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा...कभी भी अपने आपको कमजोर नहीं समझना चाहिए...यहां बे-मौत मरने से तो बेहतर है एक बार मौत का सामना कर लिया जाये...अन्यथा कायरों की तरह यहां से पलायन...?'

**देसराज पुष्प**

यह कहकर कुछ देर के लिए चुप हो गयी। फिर अचानक जोश में भरकर ऊंची आवाज में बोली, 'मैं हाथियों की बस्ती में जाऊंगी...।' वृद्ध चींटी की आवाज में जोश था एवं कुछ कर दिखाने की ललक। उसके जोश को देखकर सभी चींटियों में जोश भर गया और सभी एक स्वर में उद्घोष कर उठीं, 'आगे बढ़ो हम तुम्हारे साथ हैं।'

अगले दिन चींटियों की टोली हाथियों की बस्ती में पहुंच गई। उन्होंने अपनी समस्याओं से हाथियों के सरदार को अवगत कराया। लेकिन वह नहीं माना, 'वह हमारा रोज का रास्ता है... हमारा आवागमन वहीं से होता है...आप कहीं और चले जाओ...।' तभी तेज आंधी चलने लगी जिसने शीघ्र ही तेज तूफान का रूप ले लिया। बड़े-बड़े वृक्ष धराशायी हो गये जिसमें कई हाथी दबकर मर गये। चींटियां भागकर एक मजबूत वट वृक्ष के खोल के भीतर दुबग गई। थोड़ी देर में तूफान थम गया। सभी चींटियां खोल से बाहर आ गईं। वृद्ध चींटी हाथियों के सरदार से बोली, 'देखा सरदार, कभी स्वयं को बड़ा और दूसरों को छोटा नहीं समझना चाहिए.. .दुर्भाग्य की आंधी बड़ों-बड़ों को नेस्तानाबूद कर देती है...।' हाथियों का सरदार एक कटु सत्य को समझ चुका था। अगले ही दिन से उसने व उसकी बिरादरी ने चींटियों की बस्ती से होकर गुजरना छोड़ दिया। हाथी और चींटियों के झुण्ड सुखपूर्वक रहने लगे थे।

कविता

## सुबह

**ढूंढता रहा**
**खजाना खुशियों का**
**भौतिकता की**
**चकाचौंध में**
**ऊंची दुकानों में**
**फीके पकवानों में**
**जलता रहा**
**दीपों की पंक्ति**
**निराशा का अंधेरा**
**मिटाने की चाह में**
**मगर**
**दीपों की पंक्तियां**
**बुझती चली गई**
**अंधेरा बढ़ता रहा**
**भयावना और भयावना**
**बुझ चुका था**
**अंतिम दीप भी**
**सनसनाती हवा के**
**झोंके से**
**केवल इंतजार था**
**अब नई सुबह का**
**नये सूरज का।**

**अरुण कुमार शर्मा**

# कैसे बचें गर्मी से

गर्मी में प्राय: बदहजमी, उल्टी, दस्त या पेट दर्द जैसी शिकायत हो जाती है। ऐसा ऋतु परिवर्तन के साथ बरती गई लापरवाही की वजह से होता है। शीत ऋतु में जो खाद्य पदार्थ लम्बी रात में गहरी नींद लेने से आसानी से पच जाते हैं, वही खाद्य पदार्थ ग्रीष्म ऋतु की छोटी और बेचैनी भरी रात में ठीक से पच नहीं पाते और बदहजमी, उल्टी, दस्त इत्यादि को आमंत्रित कर देते हैं।

इससे निपटने के लिए जल तो सबसे बड़ी औषधी है ही किन्तु इसी पानी में यदि कपूर मिलाकर रख लें और जब भी ऐसी शिकायत हो तो कपूर मिला पानी एक कप पी लें। पेट सम्बन्धी हर विकार यह दूर कर देगा। एक बोतल पानी में काबुली चने के बराबर कपूर का टुकड़ा पर्याप्त होगा। पानी में कपूर मिल जाने से यह पानी कभी सड़ता नहीं, अत: कई बोतलें बनाकर पूरी गर्मी के लिए रख सकते हैं। 'हिना ट्रीटमेंट' के लिए ग्रीष्म ऋतु सबसे उपयुक्त समय होता है। सर्दी जुकाम जिन्हें प्राय: हो जाता है, ऐसे लोग भी इस ऋतु में हिना का फायदा उठा सकते हैं। वैसे भी बरसात के दिनों में हिना का प्रयोग नहीं किया जाता और शीत ऋतु में यह जुकाम को आसानी से आमंत्रित कर देता है।

**कर्मवीर अनुरागी**

'हिना ट्रीटमेंट' का अर्थ है बालों में मेंहदी लगाना। इससे बाल मुलायम, चमकीले और काले हो जाते हैं। जिन्हें 'साइनोसइटिस' की बीमारी हो, उन्हें किसी भी ऋतु में इसका प्रयोग कदापि नहीं करना चाहिए।

बालों की खुश्की दूर करने के लिए, बालों में दही का मालिश रामबाण औषधी है किन्तु शीत तथा वर्षा ऋतु में बालों में दही नहीं लगाना चाहिए। अत: ग्रीष्म ऋतु के अप्रैल, मई, जून, जुलाई इन चार महीनों में हर 3 दिन के अंतर पर लगातार दही का प्रयोग कर खुश्की को हमेशा के लिए समाप्त किया जा सकता है।

-बालों की कमजोरी, खुश्की इत्यादि दूर करने के लिए आंवला, नींबू तथा मेंहदी इत्यादि को प्रयोग करने का यही उचित अवसर है।

-कपड़ों के चुनाव पर भी ध्यान देना होगा। इन दिनों हल्के रंग के सूती और जालीदार कपड़े पहनने चाहिए। अंदर पहनने वाले कपड़े हमेशा सूती होने चाहिए क्योंकि सिंथेटिक कपड़ों से इन दिनों चर्म रोग होने की संभावना रहती है।

-घर के पर्दे मोटे तथा गहरे हरे रंग के प्रयोग करें। इससे आंखों तथा मस्तिष्क को शीतलता तथा राहत मिलती है। खिड़की, दरवाजे खुले रखें किन्तु पर्दे पूरी तरह फैले रहने चाहिएं। इससे गर्मी में उड़ने वाली धूल के कण कमरों में प्रवेश नहीं कर पायेंगे और मोटे पर्दों से छनकर आती हवा आपको राहत भी पहुंचायेगी।

गर्मी के दिनों जब भी घर से बाहर निकलें तो धूप का चश्मा, टोपी या छतरी लेना न भूलें। पैरों में सैंडिल या चप्पल का उपयोग करें। प्लास्टिक के चप्पल या जूते कदापि न पहनें।

गर्मी परिवर्तन के साथ भोज्य पदार्थों में भी सही परिवर्तन नहीं किया जाये तो अनेक बीमारियां बिना बुलाये आ धमकती हैं। ऋतु के साथ आहार का सामजस्य भी जरूरी है। गर्मी के दिनों में भोजन में दही, छाछ, प्याज, पपीता, खीरा, नींबू तथा अन्य मौसमी फलों का उपयोग बहुत जरूरी है।

इसके विपरीत तले खाद्य पदार्थों से बचें। मिर्च, मसालों का सेवन भी कम कर दें। गर्मी के दिनों में पाचन क्रिया सुस्त पड़ जाने से वैसे भी ज्यादा भूख नहीं लगती। अत: जबरदस्ती खाने का प्रयास न करें। 'थोड़ा खाना, ज्यादा पानी' इस ऋतु का सिद्धांत बना लें।

-प्रात:काल स्नान इस ऋतु में सबसे सुखदायी लगता है। सादा स्नान वैसे तो पर्याप्त होता है किन्तु यदि इस पानी में नींबू निचोड़ कर स्नान किया जाये तो यह स्नान आपको ज्यादा देर तक तरोताजा रखेगा।

-ग्रीष्मकाल में गर्मी से बचने के लिए नींबू पानी और छाछ का नियमित सेवन करें।

-भरी दोपहर में धूप में बाहर न निकलें। दिन में थोड़ा आराम गर्मी से राहत दिलाता है।

-ग्रीष्म ऋतु में इन बातों पर अमल कर आप गर्मियां आसानी से बिता सकते हैं।

(स्वास्थ्य दर्पण)

# स्वाध्याय

(पृष्ठ पांच का शेष)

महात्मा गांधी कहा करते थे, 'जब भी मैं किसी कठिनाई में होता हूं। मेरे सामने कोई जटिल व पेचीदा समस्या होती है जिसका समाधान मुझे स्पष्ट रूप से प्रतीत नहीं होता है तो मैं गीता माता की गोद में चला जाता हूं वहां मुझे कोई न कोई हल व समाधान अवश्य मिल जाता है।

**स्वास्थ्य के लाभ**

उत्तराध्यन सूत्र में यह प्रश्न आता है कि स्वाध्याय से जीव को क्या लाभ है। इसके उत्तर में कहा गया है कि स्वाध्याय से ज्ञानावरण कर्म का क्षय होता है। स्वाध्याय द्वारा व्यक्ति 'स्व' से जुड़ता है और अपनी ही समीक्षा करता है। इससे वह इंद्रिय संयम भी बढ़ता है तथा अपने दोषों की अवहेलना भी करता है और इस प्रकार उससे ऊर्जा का प्रवाह होता है जो प्राण शक्ति की आराधना है। अत: हमारी दैनिक क्रियाओं में स्वाध्याय का समावेश होना होता है जो प्राण शक्ति की आराधना है।

-जितना पुण्य धन-धान्य सहित इस समस्त पृथ्वी को दान देने से मिलता है उससे भी अधिक पुण्य स्वाध्याय करने वाले को प्राप्त होता है।

-जीवन का लक्ष्य विद्या विस्तार भी है जिससे सुख, शांति, संतोष प्राप्त होता है। अर्थात दुख से मुक्ति तथा सुख की प्राप्ति होती है।

-अच्छी पुस्तकें जागृत करती हैं उनके अध्ययन मनन चिंतन के द्वारा पूजा करने पर तत्काल वरदान पाया जा सकता है।

-उत्तम ग्रंथों, अच्छी पुस्तकों का अध्ययन करके मनुष्य महापुरुष महात्मा, ऋषि और देवता बन सकता है।

-आत्मशोधन और आत्म निर्णय का सबसे प्रधान विधान स्वाध्याय ही माना गया है।

-स्वर्ग का दृश्य अस्तित्व कहीं नहीं है। उत्तम पुस्तकों का सानिध्य मनुष्य को जहां भी मिलता है वही उसे स्वर्ग की अनुभूति होने लगती है।

-सद्ग्रंथों में सन्निहित साधु वाणियों को निरंतर अध्ययन मनन करते रहने से मन पर सुसंस्कारों की स्थापना होती है जिससे चित्त स्वयं ही दुष्कृत्यों की ओर से फिर जाता है।

-स्वाध्याय युक्त साधनों से परमात्मा का साक्षात्कार होता है।

-मरने के उपरांत मनुष्य का ज्ञान ही साथ जाता है। जहां तक मनुष्य पहुंचा रहता है अगला जन्म उसके आगे शुरू होता है।

-तत्वज्ञानी की वाणी कामधेनु है। वह श्रोताओं को प्रगति प्रदान करती है। समस्याओं को सुलझाती है। शत्रुता को मित्रता में बदलती है।

- ज्ञान को पारसमणि कहा गया है। लोहा पारस को छू कर सोना बन जाता है या नहीं? पारस कहीं है या नहीं? यह संदिग्ध है परन्तु ज्ञान रूपी पारस को स्पर्श कर तुच्छ श्रेणी के व्यक्ति भी ऊंचे स्थान पर पहुंचे हैं यह निर्विवाद सत्य है।

-मनोविकार से परेशान दु:खी चिंतित मनुष्य के लिए उसके दु:ख दर्द के समय उत्तम पुस्तकें अमृत के समान है। स्वाध्याय निसंदेह एक ऐसा अमृत है जो मानस में प्रवेश कर मनुष्य की पाश्विक प्रवृत्तियों को नष्ट कर देता है। इसीलिए ज्ञानदान को ही सबसे बड़ा दान और विद्या विस्तार को युग की सबसे बड़ी सेवा कहा गया है।

-स्वाध्याय से बढ़कर संसार में कुछ आनन्द नहीं है। पुस्तकों के अध्ययन में एक ऐसी तल्लीनता प्राप्त होती है जो लम्बी योग साधनाओं से भी प्राप्त नहीं होती है।

जिस प्रकार घर की सफाई नित्य प्रति करनी पड़ती है, कपड़े और शरीर को नित्य प्रति धोना पड़ता है उसी प्रकार मन और अंत:करण की सफाई के लिए स्वाध्याय अनिवार्य है।

# पहाड़ी भाषा कनै साहित्य लोक मंच

गिरिराज साप्ताहिक शिमला, 25–31 मार्च, 2009


कबता

## तुसां तां खड़ोतेयो

शशि कान्त शास्त्री

**जेहड़े थे पिच्छैं सै अगैं वधी गै।**
**तुसां तां खड़ोतेयो खड़ोते रही गै।**
**न्याणे थे जेहड़े स्याणे सै होये,**
**कित्ता नी कम कोई रहमी होये।**
**जित्थू तुसां थे तिथू नी हिले,**
**वधी जा हुण वी सै वी तां वधि गै।।**
**तुसां तां खड़ोतेयो...**
**किता भतेरा हुण करी सकदे,**
**कोई किछ करे वधी तुसां सकदे।**
**कुथी नी वसोन्गे कसम ऐ ही खा,**
**तुसां सा-ही छाली नें भेठीं चढ़ी गैं।।**
**तुसां तां खड़ोतेयो...**
**तुस्सां हन् गबरू डरणे दी गल क्या?**
**होन झिल कण्डे पथरां दी गल क्या?**
**मुलखे दे गबरू वस वधदे-ई गै,**
**तुसां तां खड़ोतेयो खड़ोते रही गै।।**
**तुसां तां खड़ोतेयो**
**मर्द जे हुन्दे जेहड़े कमें हथ पान्दे,**
**ओन्दीया मुसिवतां ने कदी नी घबरान्दे।**
**अध वो मझाल तां डराकू छड्डी ओन्दे,**
**मता किछ करणा है हाल़ी घबराई गै।।**
**तुसां तां खड़ोतेयो...**

लेख

# जबरा

**पिछले** मीहने हमीरपुर जाने दा मौका मिलया। रिश्तेदारियां च इक ब्याह था। बयाह पुगतना जरूरी था। से उथी इक गांवे च पुजी गया जाइके।

ब्याहे दिआं रैनका लगूरिआं थिआं। असें बी जाइके मराज तिनहा रौनकां च शामिल होई गए। जांदयां जो ही चा बूंदी आई गई। इकी प्लेटा च पकौड़े रखोई गए। असें बी हौले हौले गेड़ा देना शुरू करी ता। "जबरा आई गया।" अचानक मेरे कनां च इक जनानां दी अवाज पेई।

तां जे बारखा अंगने च देखया तां इक सयाणा जेहा आदमी सोटूए दे टोहे चली आया करदा था। से जनानां तिसखा ते कूंहड कढी के हुण अप्पू ची हिएं खुसर-फुसर करने लगियां। पता चलया इथी सयाणयां बुढयां जो जबरा बोलदे। माहरे कहलूरा च सयाणा बोलदे। हमीरपुर कांगड़े च जबरा बोलदे। पंजाबा खा बुढ़ा या बुढ़ी बोलदे।

याद आया इक बाद दादिया जो बोलया था सयाणी तां तिसा बुरा मनाया था। पर अपना गुस्सा जाहिर नी होने दितया था। तिसा मिंजो समझाया था– "बच्चा तैं बी इक दिन सयाणे होणा। तेरे बी बाल चिट्टे होने। दंद है नी रैहणे। मुंहे झुरियां पेई जानियां। उठदे बैठदे गोडयां च पीड़ां होया करनिआ।" हाऊं चुप रेहा। चुपचाप सब कुछ सुनदा रेहा। अज बी याद ही दादिया दी से गल– "से जे जमदा से मरदा बी हा। से जवान होर सयाणा बी होंदा।" बादे ते ऐ गल्लां कताबां च पढ़ियां। महात्मा बुद्ध दी काहणी पढ़ी तां बी अखीं खुलियां। से जे संसार दा सच हा तिसते असें किहां अखीं बंद करी रखदे। होर तां होर गलाने बुलाणे च बी असें लोक समझदारी नी करदे। किस कने किहां गलाना ऐ नी समझदे होर नां ही अगे अपने बालकां जो ही समझाने दी कोशिश करदे।

इक घटना याद आया करदी। थोडरूं दिनां दी। इक छोटा छह सत साल दा बालक इक पान वाले दी दुकान पर आया। तिनी जेबा ते पैसे कढ़े होर बोलया–"काना अंकल इक ब्रेड देओ।"

तिस बालके रा ऐहडा बोलना था कि दुकानदारे तिस जो जोरे दा चपैड़ मारया। बालक पुइयां रूढ़ी गया होर जोरे जोरे कने रोने लगया। लोकां दी भीड़ इकट्ठी होई गई उथी इकदम। दुकानदार गुस्से कने हल तक

बी लाल पीला था। से बड़बड़ाया करदा था–"सालयां जो गलाने दी तमीज नी।" "क्या होया?" भीड़ा च ते इक आदमिए तिस बालके जो पुचकारी के चुप करांदे होए पुछया था। "क्या होणा? काणा अंकल काणा अंकल बोलदे। ऐ सखाऊंदा इनहां रे सयाणया।" तिनी दुकानदारे फेरी बोलया था।

दरअसल च से दुकानदार त था काणा ही। इक अखी ते काणा होने दी वजह ते तिसजो सब काणा ही बोलदे थे। जेहड़ा जे बड़यां बोलणा से ही बालकें सिखणा। बालकां जो क्या पता तिसरा काणा नांव हा या बांके राम। बांके राम जो पता त था सब तिसजो तिसरी पिठी पिछे काणा बोलदे। पर गुस्सा तिसदा नासमझ बालके पर उतरया। ऐहड़ा कई बार होंदा। से जे कोई लंगड़ा हो तिसजो लंगड़ू बोली देंदे। जाओ लंगड़ुए दी दुकाना ते लेई आओ फलाना समान। इक डाक्टर लंगड़ू था तिसजो सब लंगड़ू डाक्टर ही बोलदे थे।

✍ कुलदीप चंदेल

गल चलूरी थी जबरे दी। जे से जनाना ऐहडा बोलदी–"जेठ होरी आए या फलाने दे पिताज जी आए या फलानिया दा सौहरा आया बगैरा बगैरा।" तां गल ही कुछ होर थी। सुनने औले जो बी खरा लगना था। पर असें लोक रोजाना दी जिंदगी च सभ्याचार बी भुलया करदे। तैंती तक जे किसी जो क्वाच गल नी गलाई लेई तैंती तक चैन नी औंदी।

जरा सयाणया, जबरयां दा मान सम्मान करी के देखो केहड़ा चैन मिलदा। सयाणया जबरयां कने ही ऐ दुनिया सजूरी। सयाणया, बुढ़यां जो ओल्ड एज होम भेजन दा रिवाज कैं चलया करदे। कैं नी सोचदे इक दिन सबनी जबरा जबरी बनना। सयाणा सयाणी बनना।

देखो मास्टर विद्यादत होर जो। से पचानवे सालां दे होई गऊदे। तिनहा रे पुत्र होर बहुआं तिनहां री बडी सेवा करदे। घरे औली कोई चाली साल पहले मरी गई थी। से चांहदे तां होर ब्याह करी सकदे थे। पर है नी कितया तिनहे होर ब्याह। धीआं पुत्र पढाए होर ब्याहे। लोक बोलदे मास्टर जी दी बहुआं खरिआं आइयां। बहुआं तां खरिआं तां जे पुत्र खरे हे। जे पुत्र नी होंदे कमे दे तां बहुएं किती मारनी थी परवाह। पहले अपनी औलाद ठीक होनी चांहिदी। बहुआं बी तां ही ठीक होंदिआं।

कोई बी तीज त्याहार हो मास्टर विद्यादत होर ते तिनहा रे पुत्रें होर बहुआं पहले सारे रिवाज कराने। दान पुण पूजा पाठ कराना। तां फेरी अगला कम करना। होलिया जो मास्टर होर पर गुलाले दा टिका तिनहा रे पुत्रें- बहुआं लगाना। दिवाली लोहडी जो मास्टर जी पहले पूजा करनी तां सारयां करनी। जन्मदिन तिनहां दा बड़े बांके तरीके कने मनाया जांदा। गरीब गुरबयां जो रोटी खुलाणी। मुहल्ले च रोटी बंडणी से जे घरे पकी होंदी जन्मदिने पर।

देखया जाओ जे तां सयाणे जबरे बोझ नी हे। इनहां जो बोझ समझना बी नी चाहिदआ। सयाणयां दा गलाऊदा होर अमलयां दा नाहूदा– बाहदे ते औंदा याद। ऐ कहावतां इहां ही नी बनी गऊदिआं। इनहां जो बनदे बनदे बी बनाने औलयां जो समाज दी लैबोटरी च तपने पया तां दो लैनां बकनिआं से जे अज पत्थर पर लकीर दे रूप च जानिआं जानदिआं।

असां दे नेड़े तेड़े कई ऐहड़े लोक बी हे तिनहें जे हमेशा दूजे जने जो तिसरे मुंहे पर बी होर पिठी पिछे बी इज्जती कने ही बुलाने दी आदत पाउरी। कुछ ऐहड़े से जे कवाच ही गल करदे।

# छिंज मेलेयां री जान कनै शान

**म्हारे** हिमाचला च लगणे आले मेलेयां च इयां त लग-लग किस्मा रे खेल शामल हये पर छिंज तां हरेक मेले री जान हयी। हिमाचला च कोई भी एड़ा मेला नी होणा जिस च जे छिंज नीं कुली या लड़ी जांदी हो। हिमाचला च कुश्तियां जो छिंज रे नां ते ही जाणा जांदा हया। छिंजां रे पीछे कई कहाणियां बणी गई रीयां। ऐड़ा भी सुणने च आंवा हया पई पुराणे टैम च लोक आपणी मन्नौती या सुखणा पूरी होणे पर छिंज कुलादें थे कनै इनाम आदि भी बंडदे थे।

बहुतिया इलाकयां च ता बकायदा 'डंटोरी' या ढोल बजी कनै लोकां जो दिंज रे बारे च सूचना दिति जांदी थी। छिंजा आली जगहा पर इक झण्डा गडी कनै धूप बती बाली कनै प्रसाद भी बंडया जांदा था। सै जे पहलवान जीतदे थे तिना जो पगड़ी, गुर्ज, नगद इनाम भी बंडदे थे।

बलासपुरा री नलवाड़ी मेले च छिंज मुख आकर्षण हया। इसा नलवाड़ी मेले च दूरा-दूरा री जगहा कनै प्रदेशा ते बड़े-बड़े पहलवान छिंज लड़ने जो पूजदे। एड़े एड़े पहलनवान सै जे देश कनै बाहरी मुल्कां च आपण लोहा मणाई चुकी रे से इस आखाड़े री शोभा बढ़ांदें। 'हिमाचल केसरी' कनै 'हिमकुमार' ते इन्नां पहलवान जो इथी नवाजा जांदा। ऐभी छिंजा जो दिखणे मर्द तां बडियां संख्या च औंदे ही पर ऐथी जनानियां भी इन्नां दिंजां जो दिखणे औंदियां। ऐड़ी मान्यता सुणी जांदी पई छिंजा जो दिखणे औली री उम्र बदी जांदी तिस करे के बी बडी संख्या च लोक एथी जुटदे। हिमाचला रे हरेक मेले च छिंज बाकियां गेमां ते बदी गई री कनै जियां क्रिकेट रा बुखार हया तियां म्हारे मेलयां च इन्नां छिंजा रा बुखार हया ऐड़ा मनी जाई सकदा।

✍ सुषमा अरुण

निक्की कथा

# काला होर गोरा

**कणक** होर माह रा ब्याह हुई गेया था। पर जी कणक आपू जो बौहत बांका समझां थी होर आपू जो गोरा-गोरा बोली के खुश रहां थी। जेबेकि माह जो काल़ा-काल़ा गलाई के तेसरी म्हेसा हे बेजती करदी रहां थी। माह तिस्सा जो किछ नी गलांदा था बस हासी कने टाल़दा रहां था। महीने गुजरी गेये पर कणके तिस्सरी बेजती करना नी छाडी। इक ध्याड़ जी माह जो खूब जहल़नी चाणचक हे आई गेयी। तिने तिस्सा जो इक एढ़े जोरा रा थप्पड़ मारेया कि सैह ढस्स करदी पेयी गई कने तिस्सा जो डूघा नशाण पेयी गेया। स्याणे गलाहें जो कि से नशाण कणका जो हाली तिकर बिहा।

होसला संट्वार भरी के माहे गलाया–"खरा तूं गोरी ही। हाऊं काल़ा हा, पर कुदरते सभणी जो छैल़-छैल़ गुण दित्ती रे। हाऊं आपणी बड्याई नी करदा। बेशक हाऊं काल़ा हा पर भलिए नवें-निस्सरे, साजे-बेजे, लुगड़ू गौंतरयाल़े बयाह-न्याह, कथा- जगा हरेकी शुभ कारजा गास मेरा आदर-सत्कार हुंआं। तेरे ले ता जादा ही मेरे नवें-नवें नौखे पकवान बणा हें। होर ता होर मिंजो पीसी-गाल़ी के मसाला बणाई चीणी के पात्थरा रे बडे बडे गढ़-किले हाली तिकर खड़ी रे। स्यों इतिहास बणाया करदे। सभणी जीवुआ रे लोक मिंजो खूब पसन्द कराहें। पर केसी बी माहणु जो काल़े- गोरे रा भेदभाव करी कुदतरा री बेजती करने रा कोए हक निहां। भलिए लोके, हाऊं काल़ा ही खरा पर तूं आपणे गोरे रंगा गास गमान कराहीं ता करेया कर। कणका जो माह री गला सुणी के अकल ता आई हे गेयी सौगी बडी शर्म बी आई। तिस्सा री अकड़ भज्जी गेयी। तिस्से कसम खादी जे कदी बी आपणे रूपा रा गमान नी करना। कने केसी जो बी आपू ते छोटा नी समझणा। हुण सैह माह जो बौहत हे प्यार-मोहब्बता के देखदी लगी थी।

✍ कृष्ण चन्द्र महादेविया

# इटली के साथ तकनीकी सहयोग की सम्भावनाएं तलाशी जाएंगी

**हिमाचल** प्रदेश में पर्यावरण जल विद्युत एवं सौर ऊर्जा, पर्यटन, कृषि, बागवानी तथा सम्बद्ध क्षेत्रों में नार्थ आफ इटली के साऊथ टॉरोल प्रान्त के साथ तकनीकी सहयोग की संभावनाओं के बारे में पता लगाया जाएगा। यह जानकारी मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम. कुमार धूमल ने गत दिनों शिमला में नार्थ आफ इटली के साऊथ टॉरोल प्रान्त में अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान के प्रतिनिधि डा. गुन्थर कोलोग्ना के साथ प्रदेश में आर्थिकी के विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग के बारे में विचार-विमर्श करते हुए दी। मुख्य मंत्री ने कहा कि हिमाचल प्रदेश तथा इटली के साऊथ टॉरोल प्रान्त में मिलती-जुलती जलवायुगत परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए दोनों राज्यों द्वारा एक दूसरे के बेहतर अनुभवों से लाभ उठाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में साऊथ टॉरोल प्रान्त की तरह ही जल विद्युत क्षमता के दोहन की अपार सम्भावनाएं मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार के अधिकारी डा. गुन्थर कोलोग्ना के प्रस्ताव पर विस्तृत ब्योरा तैयार कर साऊथ टॉरोल के अधिकारियों के साथ लगातार सम्पर्क बनाए रखेंगे। उन्होंने कहा कि प्रदेश में जलवायुगत परिस्थितियां पूर्वानुमानों के अनुरूप न होने के कारण कड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है तथा इस वर्ष शीतकालीन मौसम (शेष पृष्ठ 11 पर)

(पृष्ठ एक का शेष) के दौरान अपेक्षाकृत बहुत कम ठंड पड़ी। उन्होंने कहा कि इसी तरह साऊथ टॉरोल सहित विश्व के अन्य स्थानों पर भी इसी तरह मौसम में अप्रत्याशित बदलाव देखने को मिल रहा है तथा इस वैश्विक समस्या के समाधान के लिए समय रहते कारगर कदम उठाए जाने चाहिए।

प्रो. धूमल ने कहा कि हिमाचल प्रदेश में पर्यटन एक प्रमुख उद्योग है, जिसमें रोजगार एवं स्वरोजगार की अपार सम्भावनाएं मौजूद है। उन्होंने कहा कि साऊथ टॉरोल प्रान्त में हर वर्ष 27 मिलियन पर्यटक भ्रमण पर आते हैं, जोकि इसकी आबादी से छह गुणा अधिक है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश पर्यटन गतिविधियों को प्रोत्साहन देने के लिए इटली के इस प्रान्त में सृजित पर्यटन अधोसरंचना से लाभ उठा सकता है, ताकि प्रदेश में अधिक संख्या में पर्यटकों को आकर्षित किया जा सके। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में हर मौसम में पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए, इटली से तकनीकी सीख ले सकता है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में शीतकालीन खेलों को आयोजित करने के लिए उपयुक्त स्थल उपलब्ध है और इस क्षेत्र में साऊथ टॉरोल प्रान्त हिमाचल के युवाओं को प्रशिक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, जिससे हिमाचल प्रदेश का नाम राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर रोशन होगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश के कृषि, बागवानी तथा सौर ऊर्जा कुछ ऐसे अन्य क्षेत्र हैं, जिनमें इटली के इस प्रान्त से तकनीकी सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि यह राज्य के बागबानों के हित में होगा कि उन्हें प्रदेश के सेब फल को लम्बे समय तक संरक्षित रखने के लिए साऊथ टॉरोल प्रान्त से तकनीकी सहयोग प्राप्त किया जाए, ताकि बागवानों को उनके उत्पाद के आकर्षक दाम सुनिश्चित हो सकें।

मुख्य मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि साऊथ टॉरोल प्रान्त से तकनीकी सहयोग के लिए सभी औपचारिकाताएं शीघ्र पूरी की जाएं, ताकि हिमाचल प्रदेश भी इटली के इस प्रान्त द्वारा इस क्षेत्र में प्राप्त प्रगति का लाभ उठा सके।

डा. गुन्थर कोलोग्ना ने साऊथ टॉरोल प्रान्त जो कि नार्थ इटली का एक स्वायत राज्य है, की ओर से प्रस्ताव का विस्तृत ब्योरा दिया। उन्होंने कहा कि यह दोनों राज्यों के लिए हितकर होगा कि दोनों के अनुभवों का लाभ उठाया जाए। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में पर्यटन विकास की अपार संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए दोनों राज्यों में तकनीकी सहयोग लाभकारी साबित होगा।

उन्होंने मुख्य मंत्री को इस अवसर पर प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए आशा व्यक्त की कि हिमाचल प्रदेश सरकार इस सम्बन्ध में साकारात्मक दृष्टिकोण अपनाएगी। प्रधान सचिव श्री सुभाष नेगी ने मुख्य मंत्री तथा डा. गुन्थर कोलोग्ना को आश्वस्त किया कि इस प्रस्ताव के सम्बन्ध में सभी औपचारिकताओं को प्राथमिकताओं के आधार पर पूरा किया जाएगा। मुख्य मंत्री के सचिव श्री बी.के. अग्रवाल भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

# सूखे से उत्पन्न...

(पृष्ठ एक का शेष) राज्य में हिमाचल प्रदेश स्टांप्स फ्रेंकिंग इम्प्लैशन रूल्स-2008 को कार्यान्वित किए जाने की आवश्यकता है, ताकि वर्तमान जटिल प्रक्रिया को सरल बनाकर भूमि पंजीकरण मामलों में पारदर्शिता लाई जा सके।

मुख्य मंत्री ने कहा कि प्रदेश में किसान पास बुकों को कानूनी रूप से वैध दस्तावेज़ घोषित किया गया है, जिन्हें भूमि हस्तांतरण एवं लेन-देन के प्रत्येक मामले के बाद नियमित रूप से अपडेट किया जाना चाहिए। राजस्व विभाग द्वारा राज्य में दिसम्बर, 2008 तक 10,72,088 किसान पासबुकें तैयार की जा चुकी हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में अवैध कब्जों के मामलों में समय पर सही कार्रवाही कर इन्हें शीघ्र निपटाया जाना चाहिए।

राजस्व मंत्री श्री गुलाब सिंह ठाकुर ने कहा कि प्रदेश में राजस्व अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वे राजस्व कार्यों का जायजा लेने एवं उन्हें निपटाने के लिए क्षेत्र का व्यापक दौरा करें। उन्होंने कहा कि विभाग का प्रयास है कि 'कैडास्ट्रल मैप्स' के डिज़िटलाईजेशन को शत-प्रतिशत सही बनाया जाए, ताकि इसे आवेदन करने पर तुरंत उपलब्ध करवाया जा सके। मुख्य सचिव श्रीमती आशा स्वरूप ने कहा कि प्रदेश में निचले स्तर पर भू-तकसीम, निशानदेही तथा इंतकाल के मामलों को शीघ्र निपटाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में सूखे के कारण फसलों को हुए नुकसान की रिपोर्ट तैयार करने के लिए राजस्व मशीनरी को अभी से अपने कार्य में तुरंत जुट जाने की आवश्यकता है। अतिरिक्त मुख्य सचिव सुश्री हरिन्द्र हीरा ने विभाग को आधुनिक बनाने के लिए उठाये गये कदमों के बारे में अवगत करवाया।

# बालिकाओं के लिए प्रेरणास्रोत-मनजीत पाल

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल मनजीत पाल को सम्मानित करते हुए

**हिमाचल** प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला से संस्कृत भाषा में स्नातकोत्तर मनजीत पाल जो सुंदरनगर तहसील के गांव भरजवाणू से संबंधित है, को हाल ही में हिमोत्कर्ष साहित्य संस्कृति एवं जन कल्याण परिषद, ऊना द्वारा ऊना में हुए 34वें वार्षिक अधिवेशन के दौरान मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गोल्ड मेडल, स्मृति चिन्ह व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इस सम्मान से गांव भरजवाणू ग्राम पंचायत जुगाहन की निवासी मनजीत पाल ने पिता श्री राजेन्द्र सिंह व माता श्रीमती व्यासा देवी के साथ-साथ क्षेत्र का नाम रोशन किया है। गांव-गांव में संस्कृत का प्रचार कर रही मेधावी छात्रा मनजीत पाल अब संस्कृत में एमफिल व पीएचडी कर इसे क्षेत्र में आगे बढ़ना चाह रही हैं। मनजीत पाल स्कूली शिक्षा में भी आगे रही है और बीएड सरकारी तौर पर अव्वल दर्जे में पास कर नाम कमाया है। मनजीत ने समाजसेवा को भी जीवन का अंग बनाया है। उसने क्षेत्र में अनपढ़ छोटे-बड़ों को भी अक्षर ज्ञान देने का बीड़ा उठाया है जिससे शिक्षा संबंधी यह कार्य चारों ओर प्रकाशमान हो रहा है। मनजीत ने संस्कृत कालेज सुंदरनगर में भी कई पुरस्कार पाए हैं। आज वह लड़कियों की शिक्षा के लिए प्रेरणा बनी है।

✍ भीम सिंह परदेशी

# अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता...

(पृष्ठ एक का शेष)वर्धा महाराष्ट्र में कार्यरत हैं। दूसरा स्थान डॉ. बाबू जे. की 'मेगलोमेनिया' शीर्षक कहानी का रहा है, उन्हें 4000 रुपये का द्वितीय पुरस्कार दिया जाएगा। डॉ. बाबू जे. तिरूअनन्तपुरम, केरल के निवासी कहानीकार हैं।

तीसरे स्थान पर श्री पद्म गुप्ता अमिताभ की 'हिल स्टेशन की एक शाम' शीर्षक कहानी है। इन्हें 3000 रुपये का तृतीय पुरस्कार दिया जाएगा। श्री अमिताभ हिमाचल प्रदेश के गांव देवठी, जिला सोलन के मूल निवासी हैं और शिमला के एक चर्चित कवि रहे हैं। गत दो वर्षों से ही कहानी लेखन में सक्रिय हुए हैं और इन दिनों अम्बाला में हैं।

श्री बी.के. अग्रवाल ने कहा कि इस प्रतियोगिता में चार सांत्वना पुरस्कार भी रखे गए थे, ये सांत्वना पुरस्कार जयपुर के डॉ. यश गोयल की कहानी 'षष्ट्पूर्ति', हिमाचल प्रदेश के मण्डी नगर के श्री योगेश्वर शर्मा की रचना 'पानी पी लो भैया', पालमपुर हिमाचल प्रदेश के श्री त्रिलोक मेहरा की कहानी 'भ्यागड़ा' तथा कोलकाता के डॉ. सरोज खान बातिश की कहानी 'डॉटर ऑफ द क्रास' को प्रदान किए जाएंगे। सांत्वना पुरस्कार में प्रत्येक रचनाकार के लिए 2000 रुपये की राशि है।

श्री अग्रवाल ने कहा कि विभाग की त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'विपाशा' के अंतर्गत किसी साहित्य विधा की प्रतियोगिता पहली बार आयोजित की गई। उन्होंने कहा कि इस प्रतियोगिता के लिए देश से 21 राज्यों से कुल 221 कहानियां प्राप्त हुई थीं।

कहानी प्रतियोगिता के निर्णायक पैनल में प्रख्यात साहित्यकार श्री प्रयाग शुक्ल, प्रसिद्ध कथाकार श्रीमती मृदुला गर्ग तथा प्रतिष्ठित कथाकार श्री मंजूर एहतशाम शामिल थे। पुरस्कृत कहानियां 'विपाशा' के कहानी विशेषांक में प्रकाशित की जाएंगी जबकि कुछ अन्य चुनी हुई कहानियां भी इस अंक में दी जाएंगी। श्री अग्रवाल ने कहा कि विपाशा के अंतर्गत 'कविता' तथा 'नाटक' आदि विधाओं की प्रतियोगिताएं भी करवाई जाती रहेंगी, इससे रचनात्मक माहौल का निर्माण हो सकेगा और सृजनात्मक साहित्य पाठकों के समक्ष लाया जा सकेगा। विपाशा के सम्पादक डॉ. तुलसी रमण ने कहा कि इस प्रतियोगिता में अहिन्दी भाषी क्षेत्रों की भागीदारी उल्लेखनीय रही है और हिमाचल प्रदेश के कहानीकारों ने भी कुल सात पुरस्कारों में से 3 पुरस्कार प्राप्त करके कहानी विधा में राष्ट्रीय स्तर पर अपनी सम्मानजनक प्रस्तुति दर्ज की है।

उन्होंने कहा कि इस प्रतियोगिता में शामिल हुई कहानियों में जहां आज के समय में जीवन बसर कर रही विभिन्न पीढ़ियों की प्रबल मानवीय समस्याएं उजागर हुई हैं वहीं भारतीय समाज के संघर्ष की जीवंत कहानियां भी सामने आई हैं।


## HIMACHAL PRADESH UNIVERSITY, SHIMLA
### CONDUCT SECTION (EXAMINATION NOTICE)

The Post-graduate examinations for II/IV/VI Semester Regular and I/III/V Semester Re-appear candidates of MA/ M.Sc./ LL.B./ M.Com./ MBA/ MCA/ MTA and all other P.G. Degree /Diploma Courses in Computer Sciences, Journalism (Annual) etc. will be held **w.e.f. 6th June, 2009 (06.06.2009).**

The Examination forms and fee for these examinations should reach the office of the Deputy Registrar (Examination-II), on or **before 16th April, 2009** (16.04.2009) without late fee and thereafter late fee will be charged as per University rules.

The students whose results of 'REGULAR/RE-APPEAR' Examinations held in Nov./Dec., 2008 are declared late due to delay on the part of the University may fill-in their examination forms and remit fee of their respective examinations within 15 (fifteen) days from the date of declaration of their previous result without late fee and thereafter late fee will be charged as per University rules. Separate examination forms accompanied with requisite fee shall have to be submitted for each Semester Examination.

Private/Re-appear/Improvement of Division/Improvement of Score Examinees are advised to obtain the examination forms on payment of Rs.5/- per form from the University Counter or by sending crossed IPO's/Bank Draft of the value of 15/- drawn in favour of the Finance Officer, from the Incharge, Enquiry Section. MONEY ORDERS WILL NOT BE ACCEPTED.

It is the entire responsibility of the candidates to procure the examination forms and submit the same by due date. Late receipt of the examination forms from the University will not be an excuse for its late submission. **Incomplete examination forms, without fee, registration number and recent three pass-port size photos dully attested will not be accepted and will be rejected straightaway.**

सं: 1-29/02-एचपीयू/पीआरओ/16.3.09

Controller of Examinations



## HIMACHAL PRADESH UNIVERSITY, SHIMLA-171005.
## ADMISSION TO MBA THROUGH HP-CMAT-2009
### INSTITUTE OF MANAGEMENT STUDIES
**(A nodal agency for HP State Combined Management Aptitude Test)**

Applications are invited for HP State Combined Management Aptitude Test (HP-CMAT) 2009 for MBA admission to the following institutions:

- Institute of Management Studies, H.P. University, Shimla-171005.
- MBA (Agribusiness) Programme Dr. Y.S. Parmar University of Horticulture & Forestry, Nauni, Solan (HP),
- Institute of Engineering & Technology, Baddi, Distt. Solan.
- Institute of Management Studies, Baddi, Distt. Solan.
- L.R. Institute of Management, Solan,
- H.P. Institute of Management Studies, Totu, Shimla,
- Himalayan Institute of Management Studies, Kala Amb (Sirmour),
- School of Business Management, Shoolini Institute of Life Sciences & Business Management, Solan
- Shimla Institute of Management & Technology, Shimla-171006.

**INSTITUTE OF MANAGEMENT STUDIES, H.P. UNIVERSITY, SHIMLA-171005.**

- Institute of Management Studies is a Centre of Excellence in Management Education for the last 38 years.
- Excellent climate and state of art infrastructure make learning in the institute a unique experience.
- Well qualified and experienced faculty is supplemented by distinguished guest faculty from industry and academic work.
- Placement cell maintains a linkage between the institute and the corporate world.

Total Quality Management is the hallmark of education in the Institute.

**ADMISSION PROCESS:**

- Graduate in any discipline from a recognized university with 50% marks (45% for SC/ST candidates).
- Admission to MBA Programme is based on HP-CMAT, Application Rating, Group Discussion and Personal Interview.
- Students appearing in final year of qualifying examinations can also apply.

Tel: 0177-2831653, Tele Fax: 0177-2830938
Email: ims_director@yahoo.co.in.
Website: www.imsshimla.org.

**SCHEDULE OF HP-CMAT**

| | |
|---|---|
| Sale of Handbook of Information | 25.03.2009 onwards |
| Last date for receipt of application in Shimla by 5.00 p.m. | 16.05.2009 |
| HP-CMAT Examinations | 06.06.2009 |
| Result of HP-CMAT | 15.06.2009 |

**HOW TO APPLY**

Application form along with Handbook of Information can be obtained from the Institute on cash payment/demand draft* at the following rates:-

| | Cash Counter | By Post |
|---|---|---|
| **General Category:-** | | |
| Subsidized and Non-Subsidized | Rs. 500 | Rs. 550 |
| **SC/ST Category:-** | | |
| Subsidized and Non-Subsidized | Rs.250 | Rs.300 |

*Demand Draft should be drawn in favour of Director, Institute of Management Studies, H.P. University, Shimla.

- **Examination Centres: Shimla, Solan, Dharamshala, Hamirpur, Mandi, Chandigarh & Delhi.** (*Note: The centre will be created depending on availability of adequate number of applicants*)
- Candidates desirous of seeking admission in MBA programme of Institutes other than Institute of Management Studies, H.P. University should apply separately to the respective Institute(s).

**Prof Deepak Sood**
**Director**

सं: 1-29/02-एचपीयू/पीआरओ/59/16.3.09

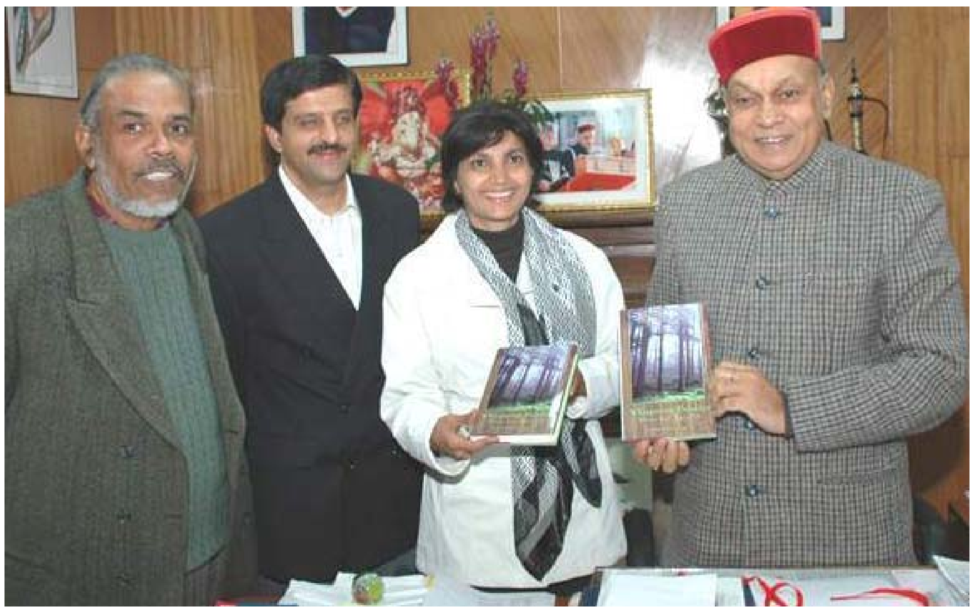

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल शिमला में मीनाक्षी चौधरी की पुस्तक का विमोचन करते हुए।

# 'विस्परिंग देवदार' का विमोचन

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों प्रदेश की विख्यात लेखिका मीनाक्षी चौधरी द्वारा सम्पादित शिमला हिल्स के लेख संग्रह 'विस्परिंग देवदार' नामक पुस्तक का विमोचन किया। पुस्तक में हिमाचल विशेषकर शिमला भ्रमण पर आने वाले प्रसिद्ध व्यक्तियों के निजी अनुभवों पर आधारित विभिन्न लेखों को शामिल किया गया है। पुस्तक को ऐतिहासिक एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि से जोड़ते हुए इसमें आधुनिक दौर के युवा एवं प्रसिद्ध लेखकों के लेखों को भी प्रमुखता से प्रकाशित किया गया है। इस पुस्तक में महामहिम दलाई लामा, महात्मा गांधी, खुशवंत सिंह, वी.एस. रमा देवी तथा अन्य लेखकों के लेख शामिल किये गये हैं। यह संग्रह शिमला व इसके आसपास के इलाकों की लोक संस्कृति व जीवन पद्धति को संजोए है।

मुख्य मंत्री ने इस सफल प्रयास के लिए मीनाक्षी चौधरी को बधाई देते हुए कहा कि उनके इस सराहनीय योगदान से प्रसिद्ध लेखकों तथा हिमाचल से जुड़ी विभूतियों के निजी अनुभवों तथा आधुनिक दौर के युवा एवं प्रसिद्ध लेखकों के लेखों को एक पुस्तक के रूप में संकलित विभिन्न लेखों की सामग्री पाठकों तथा शोधकर्ताओं को हिमाचल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा वर्तमान स्थिति की जानकारी प्राप्त करवाने में उपयोगी सिद्ध होगी।

धर्मगुरु दलाई लामा अपने आलेख 'हिमाचल प्रदेश, माई अडोप्टिड होम' में लिखते हैं, 'कुल मिलाकर हिमाचली जीवन का मेरा अनुभव काफी सुखद रहा है। यह खुशी की बात है कि पचास वर्षों से अपने आधे से अधिक कि जीवन काल में हिमाचल मेरा घर रहा है। यहां की हवा साफ और संगीतमय है। वातावरण अच्छा है। यह रहने के लिए अत्यंत प्रसन्न करने वाला स्थान है। इससे भी बढ़कर यहां के लोग मित्रतापूर्ण, सीधे, स्पष्टवादी और सबका स्वागत व आदर करने वाले हैं।'

भारत के सबसे अधिक पढ़े जाने वाले व सुपरिचित लेखक खुशवंत सिंह अपने आलेख 'समर कनेक्शन' में स्वयं को 'आधा हिमाचली, आधा दिल्ली वाला पंजाबी' बताते हुये कहते हैं, 'मेरी हिमाचल की वार्षिक यात्रायें शिमला, मशोबरा और पिछले 30 वर्षों से कसौली तक सीमित रही हैं। मैं आसपास की सारी पहाड़ियों और घाटियों में पैदल घूमा हूं। एक बार मैं छत्तीस मील दूर तत्तापानी तक गया जहां सल्फर के गर्म पानी के चश्मे हैं। एक बार दो चांदनी रातों और एक पूरा दिन पैदल चलकर मैं शिमला से नारकण्डा और वापिस शिमला (72 मील) तक लगभग बिना रूके चला था।' मीनाक्षी चौधरी शिमला से सम्बन्ध रखती हैं। प्रकृति और लोगों के जीवन को जानने-समझने की उनकी रूचि नाईजीरिया (पश्चिमी अफ्रीका) में पनपी जहां उन्होंने अपने बचपन के कुछ वर्ष बिताये। उन्होंने इंडियन एक्सप्रेस के संवाददाता के रूप में कार्य किया है और आउटलुक ट्रेवलर के साथ भी कार्य किया है।

इससे पूर्व मीनाक्षी चौधरी 'घोस्ट स्टोरीज ऑफ शिमला हिल्स', 'डेस्टिनेशन हिमाचल: 132 ऑफबीट एण्ड 12 पॉपुलर गेटवेज', 'ए कम्पलीट गाइड टू द लैण्ड ऑफ गॉड', 'एक्सप्लोरिंग पांगी हिमालयाज: ए वर्ल्ड बियाण्ड सिविलाईजेशन' और 'गाइड टू ट्रेनिंग इन हिमाचल' नामक पुस्तकें लिख चुकी हैं।

# पारिस्थितिकीय संतुलन बनाने के लिए कारगर कदम

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने निर्देश दिए हैं कि प्रदेश के विभिन्न भागों में जलग्रह क्षेत्र प्रबन्धन योजना के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित बनाने के लिए राज्य में 'विशेष उपयोग वाहन' (एसपीवी) के गठन की सम्भावनाओं का पता लगाया जाए। मुख्य मंत्री ने गत दिनों शिमला में राज्य में इस योजना से जुड़े समस्त उच्च अधिकारियों को जारी दिशा- निर्देशों में इस निकाय को शीघ्र गठित करने की आवश्यकता पर बल दिया है, ताकि जलग्रह क्षेत्र प्रबन्धन योजना के तहत वांछित परिणाम प्राप्त किए जा सकें। उन्होंने कहा कि विश्वभर में पर्यावरण ह्रास को ध्यान में रखते हुए राज्य में पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है। मुख्य मंत्री ने कहा कि प्रदेश में इस प्रकार की गतिविधियों के संचालन के लिए धन की कमी को आड़े नहीं आने दिया जाएगा तथा राज्य में विभिन्न स्वीकृत परियोजनाओं के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सम्बन्धित अधिकारियों को 'कैट' योजना के अन्तर्गत पौध रोपण गतिविधियों के लिए पर्याप्त बजट प्रावधान उपलब्ध करवाया गया है, ताकि विकास प्रक्रिया से पारिस्थितिकीय को होने वाले नुकसान की भरपाई व्यापक पौध रोपण द्वारा सुनिश्चित बनाई जा सके। उन्होंने कहा कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण तेजी से बदल रही जलवायुगत परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए प्रदेश सरकार ने क्षेत्र में पारिस्थितिकीय संतुलन को बनाए रखने के लिए कारगर कदम उठाए हैं, जिसके तहत हरित आवरण क्षेत्र को बढ़ाने के साथ-साथ वनस्पति एवं वन्य प्राणी संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

# एसआईडीसी लाभांश का एक प्रतिशत प्रदेश सरकार को देगा

हिमाचल प्रदेश औद्योगिक विकास निगम वर्तमान वित्त वर्ष के दौरान अपने कुल कारोबार के लाभांश का एक प्रतिशत भाग प्रदेश सरकार को अदा करेगा। यह निर्णय मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल की अध्यक्षता में गत दिनों शिमला में प्रदेश औद्योगिक विकास निगम, हि.प्र. राज्य लघु उद्योग एवं निर्यात निगम तथा नाहन फाउंड्री लिमिटेड के निदेशक मंडलों की बैठक में लिया गया।

मुख्य मंत्री ने कहा कि प्रदेश औद्योगिक विकास निगम के इस अनुकरणीय प्रयास से अन्य उपक्रमों को भी प्रेरणा लेकर लाभांश अर्जित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में सार्वजनिक उपक्रमों को सृजित करने का उद्देश्य उनकी व्यापारिक एवं वाणिज्यिक गतिविधियों के संचालन में व्यावसायिकता लाना है, ताकि वे बाजार में प्रचलित व्यापार एवं वाणिज्यिक प्रवृत्तियों को ध्यान में रखकर अपनी गतिविधियों में विविधता ला सके, जिससे उनकी आय में भी आशातीत वृद्धि होगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश में कार्यरत सभी सार्वजनिक उपक्रमों के लिए यह आवश्यक है कि वे बाजार में सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों के साथ अधिक व्यापारिक गतिविधियां बढ़ाने की संभावनाओं का पता लगाएं। उन्होंने कहा कि वर्तमान में कड़ी स्पर्धा के इस दौर की चुनौतियों का सामना करने के लिए अधिक परिश्रम एवं विशेषज्ञता की नितांत आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि सभी सार्वजनिक उपक्रमों को आधुनिक प्रौद्योगिकी का अधिकतक उपयोग सुनिश्चित बनाकर अपनी व्यापारिक गतिविधियों में विस्तार करना चाहिए, जिससे उनकी आय में वृद्धि होने से उपक्रमों को अपने प्रतिबद्ध उत्तरदायित्वों का निर्वहन बेहतर तरीके से करने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश औद्योगिक विकास निगम प्रदेश में अपनी गतिविधियों में व्यावसायिकता लाकर राज्य के लघु एवं मध्यम उद्योगपतियों को औद्योगिक इकाइयां स्थापित करने के लिए आवश्यक अधोसंरचना सुविधाएं मुहैया करवाने में सराहनीय कार्य कर रहा है।

**नाहन फाउंड्री के सम्पत्ति विवाद मामले को शीघ्र सुलझाने के निर्देश**

मुख्य मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि नाहन फाउंड्री के सम्पत्ति विवाद मामले को शीघ्र सुलझाने के लिए इसे संबंधित राज्य सरकार के साथ उच्च स्तर पर उठाया जाए, ताकि पड़ोसी राज्यों में फाउंड्री की बहुमूल्य संपत्ति को कुछ स्वार्थी तत्वों के कब्जे से मुक्त करवाया जा सके। उन्होंने कहा कि फाउंड्री की अम्बाला, बहादुरगढ़, नरेला, लुधियाना, सोनीपत, शाहपुर, रायसी तथा धौराला स्थित सम्पत्ति माननीय न्यायालयों के विचाराधीन है तथा इस सम्बन्ध में संबंधित माननीय न्यायालयों के समक्ष शीघ्र आवेदन करने की आवश्यकता है।

प्रो. धूमल ने कहा कि हि.प्र. राज्य लघु उद्योग एवं निर्यात निगम प्रदेश में राज्य पथ परिवहन निगम की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कच्चे माल की आपूर्ति करेगा, जिससे दोनों निगमों को लाभ होगा। प्रधान सचिव उद्योग श्री सुभाष नेगी ने निदेशक मंडलों को निगमों की वित्तीय उपलब्धियों एवं निर्धारित लक्ष्यों के बारे में अवगत करवाते हुए कहा कि भविष्य में कुछ निगमों का विलय करने की प्रक्रिया प्रगति पर है। हि.प्र. लघु उद्योग विकास निगम के प्रबंध निदेशक श्री कश्मीर चंद, नाहन फाउंड्री लिमिटेड के कार्यकारी प्रबंध निदेशक श्री सुभाशीष पांडा, हि.प्र. लघु उद्योग एवं निर्यात निगम के प्रबंध निदेशक डॉ. आर.के. सूद ने बैठक ने भाग लेकर अपने निगमों की गतिविधियों की जानकारी दी। प्रधान सचिव वित्त श्री अरविंद मेहता, हि.प्र. राज्य वित्तीय निगम के प्रबंध निदेशक श्री संजय गुप्ता तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने भी बैठक में भाग लिया।

# 'लोकतंत्र में आपके वोट का महत्व' पर सेमिनार

पब्लिक रिलेशन्स सोसाइटी ऑफ इंडिया के शिमला चैप्टर द्वारा 'लोकतंत्र में आपके वोट का महत्व' विषय पर एक सेमीनार आयोजित किया गया जिसमें पत्रकारों, शिक्षाविदों, लोक सम्पर्क व्यवसायियों, अधिकारियों, विद्यार्थियों, युवाओं तथा समाज के अन्य वर्गों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सेमीनार में वक्ताओं ने लोगों में वोट करने के प्रति बढ़ती उदासीनता पर चिन्ता जताई और कहा कि इस प्रकार की प्रवृति भारतीय प्रजातंत्र के लिए घातक सिद्ध हो सकती है। सेमीनार में भाग लेने आए वक्ताओं ने मतदान के प्रति लोगों में एक चेतना जागृत करने पर बल दिया। वक्ताओं ने यह भी चिन्ता जताई कि पढ़े-लिखे लोगों द्वारा वोट न डालना भी चिन्ता का विषय है। मतदान के प्रति लोगों के घटते उत्साह से कई बार ऐसे लोग निर्वाचित होने से रह जाते हैं जो वास्तव में लोगों का सही प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। चर्चा में यही बात उभर कर आई कि जब तक सभी पात्र मतदाता स्वेच्छा से मतदान नहीं करेंगे तब तक हमारा प्रजातंत्र सशक्त नहीं होगा और संविधान निर्माताओं ने जो समान अधिकार लोगों को दिया है उसका उद्देश्य पूरा नहीं होगा।

सेमीनार की अध्यक्षता करते हुए प्रदेश विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री वेप्पा राव ने कहा कि भारत, विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र है और सभी मतदाताओं द्वारा मतदान करना उनका कर्त्तव्य है क्योंकि इसी में देश का हित निहित हे। उन्होंने कहा कि कुछ लोग इस धारणा के आधार पर मतदान नहीं करते कि कोई उम्मीदवार उनकी पसंद का नहीं या उनके वर्ग विशेष से नहीं, जो वास्तव में सही नहीं है। यह धारणा बिल्कुल गलत है क्योंकि कोई न कोई तो चुना जाना है और उनके न वोट करने से कई बार ऐसे लोग चुन लिए जाते हैं जो वास्तव में लोगों का सही प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते। उन्होंने कहा कि जाति, समुदाय या धर्म के नाम पर मतदान करना ठीक नहीं। उन्होंने कहा कि इससे कई बार अल्पमत की स्थिति पैदा हो जाती है। उन्होंने कहा कि हमारे प्रजातंत्र में सभी को समान अधिकार है और अनेकता में एकता हमारी पहचान है। उन्होंने कहा कि हमारे देश में युवाओं को मतदान का अधिकार इसलिए दिया गया था क्योंकि वे बेहतर ढंग से सोच सकते हैं कि कौन लोगों का बेहतर प्रतिनिधित्व कर सकता है। परन्तु यह चिंता का विषय है कि युवाओं में अभी तक मतदान के प्रति वह उत्साह पैदा नहीं हुआ जिसकी अपेक्षा थी।

पब्लिक रिलेशन सोसायटी ऑफ इंडिया के शिमला चैप्टर द्वारा आयोजित सेमिनार में भाग लेते प्रतिभागी।

वरिष्ठ पत्रकार श्री पी.सी. लोहमी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि मतदान न करना अपराध के समान है क्योंकि संविधान में यह अधिकार हमें इसलिए दिया गया है कि इसका प्रयोग कर हम एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकें। हमारे देश में मतदान का विशेष महत्व है क्योंकि यहां एक आम आदमी के मत का भी वही महत्व है जो उच्च पदों पर आसीन व्यक्ति का, हम सभी का कर्त्तव्य बन जाता है कि हम मतदान अवश्य करें। उन्होंने कहा कि कई लोग जो उच्च पदों पर आसीन हैं, वोट नहीं डालते। क्योंकि वे समझते हैं कि यह उनकी गरिमा के विपरीत है। इसी प्रकार कई लोग यह समझ कर वोट नहीं करते कि उनके पास समय नहीं है। यह प्रवृत्ति भी गलत है क्योंकि मतदान का अधिकार एक ऐसा हथियार है जिससे आप राष्ट्र निर्माण कर रहे हैं। शिमला जिला न्यायालय के न्यायधीश श्री धीरू ठाकुर ने अपने संबोधन में कहा कि हमारे तंत्र में पैदा हो रहीं बुराईयों के लिए हम सभी जिम्मेवार हैं क्योंकि हम अपने मताधिकार एवं विवेक का सही प्रयोग नहीं करते। उन्होंने कहा कि राष्ट्र को युवा पीढ़ी से बहुत अपेक्षाएं हैं और उनको आगे आकर राष्ट्र निर्माण में अपना सक्रिय योगदान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि हर चुनाव में देश में करोड़ों रुपए खर्च होते हैं इसलिए सभी मतदाताओं का कर्त्तव्य बनता है कि वे अपने मतदान के अधिकार का अवश्य प्रयोग करें।पीआरएसआई शिमला चैप्टर के अध्यक्ष श्री बी0डी0शर्मा ने कहा कि सेमीनार के आयोजन का उद्देश्य लोगों में मतदान के प्रति जागरूकता पैदा करना है और मतदान न करने के क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं, उनके बारे में सचेत करना है। उन्होंने कहा कि चैप्टर इस पर और आयोजन कर लोगों में जागृति पैदा करेगा।

सेमीनार में हि.प्र. के पूर्व प्रमुख डाकपाल श्री टी.आर. शर्मा, आकाशवाणी शिमला के श्री वी0के0 उपाध्याय तथा हि.प्र. विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष डा0 टीडीएस अलोक ने भाग लेते हुए मतदान के महत्व पर प्रकाश डाला।

प्रकाशकः जे.आर. कटवाल, निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हि.प्र. शिमला–171002, मुद्रकः राजीव कुमार शंकर, नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री विभाग, शिमला–171005, फोनः 2830378, प्रधान सम्पादकः बी.डी. शर्मा, वरिष्ठ सम्पादकः आर.एस. नेगी, सम्पादकः यादविन्दर सिंह चौहान, कार्यालयः हि.प्र. मुद्रणालय परिसर, शिमला–171005, फोन व फैक्सः 2633145, ई–मेलः girirajhp@gmail.com., girirajhp@yahoo.co.in OR girirajweekly 1978@yahoo.co.in प्राप्ति स्थानः गिरिराज कार्यालय। (गिरिराज साप्ताहिक में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं)